ISSN 2455-9644

आसरा मुक्तांगन

सितंबर-2024

हिन्दी विशेषांक

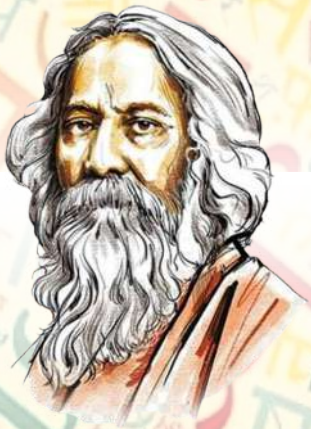

₹30/-

समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान

'आसरा मुक्तांगन' का 13वें वर्ष का पहला अंक- बाल विशेषांक का विमोचन

- आसरा फाउंडेशन की ओर से राहुल शिक्षण प्रसारक मंडल और ए.आर. कार्गो मूवर्स के सहयोग से एक विशेष कार्यक्रम खारघर, नवी मुंबई में आयोजित किया गया।
- इस समय आसरा मुक्तांगन के बाल विशेषांक का विमोचन सेवानिवृत्त आईआरएस और सीमा शुल्क लोकपाल, हृषिकेश शरण द्वारा किया गया।
- इस समय शिक्षक विशेषज्ञ डॉ. जी.के. डोंगरगांवकर, इंटरनेशनल ट्रेनर लाइफ कोच पवित्रा सावंत, आसरा फाऊंडेशन के सदस्य दिनेश सिंह और आसरा समूह के संस्थापक मोहन शिरकर आदि गणमान्य मौजूद रहे।

You can also follow us on and "Aasara Muktangan"

प्रकाशक-मुद्रक
महानंदा शिरकर

प्रधान संपादक
डॉ. रमेश मिलन

संपादक
डॉ. विमलेश शिरकर

प्रबंध संपादक
मोहन शिरकर

कार्यकारी संपादक
पवित्रा सावंत

उप-संपादक
डॉ. रमेश यादव, गुरुप्रित

संपादकीय मंडल
- डॉ. सुलभा कोरे
- डॉ. सतीश पाण्डेय
- प्रो. कुसुम त्रिपाठी
- श्री स. वि. लव्हटे
- श्री संजय भारद्वाज
- श्री बाळकृष्ण लोहोटे

सलाहकार मंडल
- गयाचरण त्रिवेदी
- डॉ. चंद्रशेखर आष्टीकर
- सरिता आहुजा (कनाड़ा)
- माधवराव अंभोरे
- जानकी प्रसाद, दिल्ली

समन्वयक एवं प्रवक्ता
- डॉ. रत्नाकर सं. अहिरे

जनसंपर्क एवं विशेष आयोजन
- बाळकृष्ण ताम्हाणे
- किशन नेनवानी
- घनश्याम कोळंबे
- दिनेश सिंह
- राजकरन पाण्डेय

विधि सलाहकार
- ऍड. रमेश शाह

विशेष प्रतिनिधि
- डॉ. वेणुगोपाल कृष्ण, चेन्नई
- आशीष कुमार, मुंबई

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : 8920111592, 991077754

आसरा
मुक्तांगन
www.aasaramuktangan.com

सितंबर-2024 वर्ष : 13, अंक : 2

इस अंक में

प्रधान संपादक की कलम से- डॉ. रमेश मिलन 5

आलेख:

विश्व में हिंदी का मान हो- डॉ. सुनील देवधर 7
विश्व में हिंदी के बढ़ते चरण- डॉ. प्रमोद शुक्ल 9
मन से बड़ा कुछ नहीं- हृषीकेश शरण 10
विश्व व्याप्त हिंदी भाषा और अगणित रोजगार- डॉ. प्रेरणा उबाले 11

भाषा

व्यक्त-अव्यक्त- वीनु जमुआर 13
अक्षर लिखें-अक्षर पढ़ें- डॉ. लतिका जाधव 15
अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस- डॉ. संतोष धोत्रे 17
मैं जिंदा हूँ अभी...- डॉ. घनश्याम अगवाल 19
'उत्तिष्ठत जाग्रत'- रामहित यादव 21
आत्मविश्वास : सफलता का सर्वोत्तम साथी- मोहन मंगलम 23

कहानी:

भेड़िये- डॉ. किशोर सिन्हा 25
मैं एक माँ हूँ- श्यामलता गुप्ता 27
सन्तवाणी, दिव्य वाणी- निरंकारी बाबा हरदेव महाराज 29

कविताएँ: 30-39

सुरेश शर्मा, डॉ. रमेश यादव, डॉ. रोशनी किरण, पवन तिवारी, गौतमी चतुर्वेदी पांडेय, देवकी कुलकर्णी, देवेंद्र कुमार तिवारी, सुरज बिरादर, डॉ. सुनील देवधर

यात्रा वृत्तांत:

ऋता सिंह- गुरूद्वारों की मेरी अद्‌भुत यात्रा 40

पुस्तक समीक्षा:

मुस्तहसन अज़्म की ग़ज़लें- समीक्षक- हृदयेश मयंक 42
राष्ट्रनायक सरदार पटेल- समीक्षक- संजीव निगम 44

भाषा संस्कृति:

भाषा, संस्कृति और संस्कार- पीतम सिंह 'प्रियतम' 45
प्रभु स्मरण 47

गतिविधियां: 48, 49, 51

'आसरा मुक्तांगन' पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के अपने विचार हैं। संपादक का इनके साथ सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।
- संपादक

आसरा मुक्तांगन

अकादमिक मंडल

न्यायमूर्ति अनंत डी. माने
उच्च न्यायालय, मुंबई (सेवानिवृत्त)

श्री ऋषिकेश शरण
प्रशासक

डॉ. नरेशचंद्र
प्रति कुलपति, मुंबई वि.वि. (सेवानिवृत्त)

डॉ. माधुरी छेड़ा
शिक्षाविद

साहित्य मंडल

डॉ. सूर्यबाला
साहित्यकार

डॉ. दामोदर खड़से
साहित्यकार

डॉ. रामजी तिवारी
शिक्षाविद-समीक्षक

डॉ. दामोदर मोरे
मराठी कवि

सहयोग

राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, वर्धा

धनंजय शिंदे

सुनील पाटिल

शबाना पटेल

श्रद्धा गांगन

'आसरा मुक्तांगन' का अभियान 'वृक्ष लगाएं, बढ़ाएं'

वर्तमान में तापमान हर जगह बढ़ रहा है। पसीना, गर्मी और उससे उत्पन्न तकलीफें...मानव झुलस रहा है, जमीन तप रही है, उसमें दरारें पड़ रही है, पशु-पक्षी आदि सभी जीव गर्मी में झुलस कर मर रहे हैं और पेड़-पौधे भी पानी के अभाव में सूख रहे हैं।

यह है 'ग्लोबल वार्मिंग' का परिवेश, जो हम सबको एक ऐसे माहौल की ओर ले जा रहा है, जहां हमारे विश्व, हमारी भविष्यगत पीढ़ी को बहुत कुछ भुगतना पड़ेगा। हमने घर, रास्ते बनाएं; हमने अपने लिए संरचनात्मक सुविधाएं जुटायी और इन सब बातों को अंजाम देने के लिए हम वृक्षों को काटते गए।

वृक्ष इस पृथ्वी का सहारा, हमारा पनाहगार जो भूमि के अंदर जाकर अपनी जड़ों से पानी को संवर्धित करता है और जमीन से ऊपर बढ़कर बादलों को आसमान से नीचे उतरवाकर बरसात करवाता है तथा हमें छांव देकर कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम करते हुए ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है।

वृक्ष का महत्व, पर्यावरण में उसकी उपयुक्तता असाधारण है, जिसे हमें जानना, पहचानना और समझना होगा। अन्यथा हम स्वयं भी झुलसते रहेंगे और हमारी भविष्यगत पीढ़ी को इससे भी ज्यादा झुलसाते रहेंगे।

पर्यावरण के संवर्धन को 'आसरा मुक्तांगन' ने अपना जीवन उद्देश्य बनाया है। हर परिवार दो-तीन वृक्ष लगाएं, उनका संवर्धन करें इसलिए 'आसरा मुक्तांगन से संबंधित सभी संस्थाओं, सदस्यों, समर्थनकर्ताओं, संरक्षकों तथा भारत के सभी परिवारों से अनुरोध है, अपील है कि वे 'वृक्ष संवर्धन अभियान' के बारे में अपने क्रियाकलापों, गतिविधियों से संबंधित फोटो- जानकारी के साथ नीचे दिए गए पते पर 'आसरा मुक्तांगन' हेतु प्रेषित करें। आपके प्रयासों को उचित स्थान और प्रोत्साहन देना, हमारा काम होगा...

आसरा मुक्तांगन, पोस्ट बैग-01,
कलवा, ठाणे-400605 महाराष्ट्र, भारत
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com

'आसरा मुक्तांगन' के संदर्भ में

'आसरा मुक्तांगन' राष्ट्रभाषा हिंदी तथा राष्ट्र को समर्पित एक साहित्यिक मासिक पत्रिका है। समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य और अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए एक सशक्त राष्ट्र की नींव को परिपुष्ट करना पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है। नवयुवकों, नारी तथा बुजुर्गों में जागृति का संचार करना तथा देश में घर-घर तक साहित्य और संस्कृति के उच्चतम संस्कारों को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लक्ष्य पूर्ति हेतु, पत्रिका सतत प्रयत्नशील है। पत्रिका का प्रकाशन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओतप्रोत प्रकाशक एवं संपादक मंडल का एक सारस्वत अभियान है। **-आसरा मुक्तांगन**

साहित्य मानव सभ्यता का प्रकाश स्तंभ

राजभाषा-राष्ट्रभाषा-विश्वभाषा के पथ पर हिन्दी के बढ़ते चरण।
सर्वकल्याणी-पयस्विनी का साहित्य में गंगावतरण।।

मित्रो! सप्रेम अभिवादन! हिन्दी विशेषांक-सितंबर 2024 अंक प्रस्तुत करते हुए मैं हर्षित और गौरवान्वित हूं।

भाषा, साहित्य और संस्कृति, समाज और राष्ट्र की पहचान होती हैं। साहित्यकार समाज के कल्याण की कामना करता है। अथर्ववेद का कथन है कि 'हे मनुष्यो! न्यायपूर्वक कल्याणमयी वाणी बोलो-

'सम्पद्च: सव्रता भूत्वा वाचंवदन भद्रपा।'
(अथर्ववेद-3-30-3)

कहने का तात्पर्य है कि मानव सभ्यता का प्रकाश स्तंभ 'साहित्य' मनुष्य की साधना का अद्भुत कल्पतरु है, जिसकी जीवनदायिनी और प्राणवायु है- भाषा। भारतीय साहित्य के इस आलोक की स्वर्णिम रश्मि है- हिन्दी भाषा। एक स्वतंत्र देश की पहचान उसके राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय चिन्ह और राष्ट्रभाषा से होती है।

14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी को मान्यता दी गई। संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग किए जाने वाले भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप निर्धारित किया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। हिन्दी को राजभाषा स्वीकार करने के पीछे कुछ महत्वपूर्ण कारण थे- हिन्दी भारतवर्ष में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। इसे हिन्दीतर भाषी भी आसानी से समझ और बोल लेते हैं।

हिन्दी भारत की आत्मा में बसी हुई है। हिन्दी हमारे हृदय की धड़कन है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुपंथी और बहुरंगी देश की सबसे बड़ी शक्ति विविधता में एकता है। हिन्दी नाना प्रकार की विधाओं, कलाओं और संस्कृतियों की त्रिवेणी बनाती है। भारतीय भाषाओं की अक्षय स्रोत-संस्कृत से ऊर्जा ग्रहण करके हिन्दी ने राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त किया है। भाषा और भाव एकता ने राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है-

मज़हब, जाति और प्रांत हो कोई,
हिन्दी सबकी पावन भाषा।
समय-समय पर दी है इसने,
राष्ट्र एकता की परिभाषा।

हिन्दी साहित्य के युगानुरूप प्रवृतियों के प्रणेता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'निजभाषा उन्नति अहै सब भाषा को मूल'

कहकर हिन्दी साहित्य की ध्वजा फहराई तो आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, रामचंद शुक्ल, दयानंद सरस्वती, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सिने गीतों, अनेक लेखकों तथा पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा तथा उसके साहित्य को जन-गण तक पहुंचाने में सार्थक योगदान दिया है। तभी तो कहा गया है-

दिनकर, निराला, प्रसाद ने संवारा इसे
तन-मन-प्राण की पुकार मेरी हिन्दी है।
सूर, मीरा, तुलसी के हृदय में निवास करे,
जन-मन में बसी मेरी मातृभाषा हिन्दी है।

योगीराज भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता के सत्रहवें अध्याय में अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं- कि ऐसे वाक्य का बोलना जो दूसरों के चित्त में उद्वेग उत्पन्न न करे, जो सत्य, प्रिय और हितकर हो तथा वेदशास्त्रों के अनुकूल हो, वाणी का तप कहलाता है-

'अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङमयं तप उच्यते।।'

वाणी का यह तप और सौंदर्य-कला, साहित्य और वाणी की अधिष्ठात्री देवी माँ शारदे ने हिन्दी को प्रदान किया है।

अपने शब्दों को विराम देते हुए कहना चाहूंगा- भारत के हर प्रांत की अपनी-अपनी मातृभाषा है, जिनके प्रति उन्हें अपने दायित्व का पालन करना है। लेकिन हिन्दुस्तान का एक विशाल भाषा कुटुम्ब भी है जिसका हर भारतवासी अभिन्न अंग है और हम उसमें परस्पर प्रेम और सहयोग का वातावरण बनाकर अपने राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधे रख सकते हैं। हिन्दी भाषा को अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ बताना भी हमारा मंतव्य नहीं है। हमारा दायित्व तो यह है कि देश की सभी भारतीय भाषाओं से शक्ति प्रदान करने वाले मूल्यों को लेकर हिन्दी राजभाषा...। राष्ट्रभाषा, सम्पर्कभाषा, जनभाषा के पथ से लेती हुई विश्वभाषा के सिंहासन पर अलंकृत होगी।

माँ समान पूजनीय मातृभाषा हिन्दी को शत-शत वंदन।

कवि शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्लोक को लोक तक पहुंचाने के लिए लोक बोली में 'रामचरितमानस' की रचना करके ज्ञान और भक्ति का प्रकाश फैलाया, उनकी जयंती पर शत-शत नमन!

स्वतंत्रता के 77 वर्ष पूर्ण होने पर आजादी की लड़ाई का लोकप्रिय नारा 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे' देने वाले स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक तथा महान स्वतंत्रता सेनानियों का कोटि-कोटि वंदन-अभिनंदन।

ग्लोबल वार्मिंग पर जागृति अभियान ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं, पेड़ काटना बंद करें। मानव, पशु, पक्षी, धरती के प्राणियों के जीवन की रक्षा करें। 'आसरा मुक्तांगन' के इस विशेष संकल्प को पूर्ण करने में सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा है।

अंत में इस विशेषांक के सभी सहभागी लेखकों, कवियों के रचनात्मक सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। आशान्वित हूं कि भविष्य में आपकी लेखनी पत्रिका को समृद्ध करती रहेगी।

-डॉ. रमेश मिलन
9029784346

डॉ. सुनील देवधर

विश्व में हिन्दी का मान हो...

जनम विभ्रती बहुधा विवाचसम,
नाना धर्मानम पृथ्वी यथोसकम।
सहस्र धारा द्रविडस्य में दुहाम,
ध्रुवेव धेनुरनपस्फूरनती।

अर्थात अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले तथा अनेक धर्म को मानने वाले जन समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों को, सामान धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने वाली, स्थिर जैसी यह पृथ्वी, हमारे लिए धन की सहस्त्र धाराओं का, इस प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती है।

यह श्लोक अपने अर्थ में भारत भूमि के संदर्भ में पूरी तरह खरा उतरता है। विश्व में संभवत: हमारा एकमेव देश है जहां 22 प्रांतीय भाषाएं तो संविधान की आठवीं सूची में वर्णित हैं ही, साथ ही अन्य भाषाएं और न जाने कितनी हिंदी की, व अन्य उपबोलियां यहां बोली जाती हैं। इतना ही नहीं संसार के छह प्रमुख धर्म और इसके अलावा भी विश्व में मान्य कई धर्म के लोग यहां निवास करते हैं। इस दृष्टि से भारत अन्य की तुलना में एक अलग भूमि है। अब प्रश्न आता है देश की घोषित राष्ट्रभाषा का। तो यह कहना होता है कि अपार जन समर्थन, उपयोग और विस्तार के बाद भी अभी घोषित रूप से हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं है और इसके पीछे अनेक राजनीतिक और सिर्फ राजनीतिक कारण ही प्रमुखता से हैं और स्पष्ट होते हैं। विश्व की दृष्टि से देखा जाए तो वर्तमान में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी प्रथम तीन भाषाओं में है, लेकिन जमीनी स्तर पर अभी इसका व्यवहार पूरे भारत में भी नहीं हो सका है। संयुक्त राष्ट्र संघ को हिंदी में सन 1978 में श्री अटल बिहारी वाजपेई ने संबोधित किया और यह पहला अवसर था। इसके बाद 1988 में श्री पीवी नरसिम्हा राव और फिर बाद में श्याम नंदन मिश्रा ने हिंदी में भाषण दिया और अब तो कई अवसरों पर और कई देशों में श्री नरेंद्र मोदी हिंदी में संबोधित करते हैं। जब श्री अटल बिहारी वाजपेई ने संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण दिया था, उसके बाद एक कुंडली लिखी थी- वह कैदी कविराय के नाम से भी कविता करते थे। लिखा था- गूंजी हिंदी विश्व में /स्वप्न हुआ साकार/ राष्ट्र संघ के मंच पर/ हिंदी का जयकार/ हिंदी का जयकार/ विश्व हिंदी में बोला/ देख स्वभाषा प्रेम/ विश्व अचरज से डोला/ कह कैदी कविराय मेम की माया टूटी/ भारत माता धन्य/ स्नेह की सरिता फूटी।

'विश्व अचरज से डोला' और 'मेम की माया टूटी' कहकर हमें संकेत दिया गया है कि हिंदी की प्रभावी वाक्य रचना, प्रवाह मयता ऐसी है कि विश्व को भी आश्चर्य है कि समर्थ होते हुए भी हिंदी की दशा ऐसी क्यों है? मेम यहां सिर्फ व्यक्ति नहीं, भाषा भी है जो हिंदी के कारण अपने प्रभावी और मायावी जाल को, संसार को टूटता अनुभव कर रही है। इसमें कहां संदेह है कि अंग्रेजी आज विश्व स्तर पर लगभग 57 देशों में बोली जाती है, 28 देश फ्रेंच और लगभग 22 देश स्पेनिश भाषा का इस्तेमाल करते हैं। जबकि अंग्रेजी मात्र पांच देशों की घोषित राष्ट्रभाषा है- इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड। इसके बावजूद इस भाषा ने विश्व स्तर पर, विशेष कर विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में मजबूती से अपना वर्चस्व बनाए रखा है। आज हम बड़े गर्व से कहते हैं कि विश्व के लगभग 150 देशों के करीब इतने ही विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। विश्वविद्यालय का अर्थ हुआ कि उच्च स्तर पर हिंदी का अध्यापन। लेकिन दूसरी ओर भारत में, प्राथमिक कक्षाओं से लेकर उच्च स्तर पर यानी विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापन न केवल तेजी से घट रहा है बल्कि प्राथमिक स्तर पर सिर्फ क्या हिंदी, अन्य प्रांतीय भाषाओं की शालाओं में भी उन भाषाओं की स्थिति

विचारणीय है। स्कूल कॉलेज में छात्रों का ना होना हिंदी के भविष्य पर सवाल खड़े करता है। यह स्थिति बहुत निराशाजनक लग सकती है और कुछ अंश में है भी लेकिन फिर भी अन्य ऐसे कारण और प्रावधान हैं जिस कारण हिंदी अपना स्थान बनाए हुए है।

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में इस भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, महर्षि अरविंद, दयानंद सरस्वती, केशव चंद्र सेन, काका कालेलकर जैसे विचारकों ने हिंदी का समर्थन किया और माना कि राष्ट्रीयता को एक सूत्र में पिरोने और संस्कृति की पहचान के लिए हिंदी ही सर्व स्वीकृत भाषा हो सकती है। न केवल देश के बल्कि विदेशी विद्वानों ने भी हिंदी को अपनाया। इसमें एक महत्वपूर्ण नाम है फादर कामिल बुल्के का। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डॉक्टर माता प्रसाद गुप्त के निर्देशन में 'राम कथा: उत्पत्ति और विकास' विषय पर अपना शोध प्रबंध हिंदी (देवनागरी) में प्रस्तुत किया। भाषा प्रेम के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण नाम है कोलंबिया की गायिका और गीतकार शकीरा इसाबेल। जिन्होंने 2010 के वर्ल्ड कप फुटबॉल फीफा में 'वाका वाका दिस टाइम फार अफ्रीका' गाकर विश्व में धूम मचाई। लेकिन उनकी पहचान मात्र इतनी नहीं है, अपने वेयरफुट फाउंडेशन के माध्यम से वे सामाजिक कार्य करती हैं और उन्हें कोलंबियन राष्ट्रपति की शिक्षा सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया था। वे स्वयं भाषाविद और (स्वयं) लैटिन, अरबी, स्पेनिश, इटालियन भाषाओं में भी गाती हैं। यह संदर्भ देने और कहने का उद्देश्य यही है कि हमारे देश में भी मनोरंजन के क्षेत्र मंचीय कार्यक्रम और फिल्म के माध्यम से हिंदी दूर देश में न केवल पहुंची है बल्कि पसंद की गई है लेकिन इसे प्रस्तुत करने वाले कलाकारों और काम करने वाले अभिनेता, निर्देशकों का अंग्रेजी प्रेम साफ दिखाई देता है। तब कहना होता है कि भाषा संवाद के लिए है और एक ऐसा सार्थक संवाद जिसमें समस्त समाज और राष्ट्र के हित पूरे होते हैं। लेकिन कोई एक ऐसी भाषा जिससे सभी अपने हित और स्वार्थ अपने-अपने स्तर पर पूरे करते हों और उसे उसी तरह छोड़ते हों, जैसे कोई मुसाफिर अपना गंतव्य आने पर सहयात्रियों का साथ छोड़ देता है, तो वह भाषा हिंदी ही कही जा सकती है, जो सबसे अधिक विवादों में दिखाई देती है।

ऐसा नहीं है कि हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार के प्रयास नहीं हुए, ऐसे प्रयास कई स्तरों पर किए गए, जिसका एक उदाहरण है- विश्व हिंदी सम्मेलन। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 में नागपुर में हुआ उस समय देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इसका उद्घाटन किया। अब तक 3 वर्ष के अंतर से लगातार 12 विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुए। कुछ एक अवसरों पर यह अंतर अधिक भी रहा है। न सिर्फ अपने देश में बल्कि बाहरी देशों जैसे- इंग्लैंड, अमेरिका, त्रिनिदाद, सूरीनाम, मॉरीशस, जोहानिसबर्ग, सहित 12वां सम्मेलन फिजी में 2023 में हुआ। 2006 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के समय में यह निर्णय लिया गया कि 10 जनवरी को, विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाए। त्रिनिदाद की संस्था हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चनाका सीताराम ने कहा था- 'एक समग्र विश्व संस्कृति की भाषा हिंदी ही हो सकती है, इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ को अपनी सूची में हिंदी को एक विश्व भाषा के रूप में जोड़ना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ, हिंदी भाषा को स्वीकार किए बिना अधूरा है।'

भारत का वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, भारतीय ज्ञानपीठ, जिसने ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हर पुस्तक और लगभग हर साहित्यकार को हिंदी में अनुवाद माध्यम से उपलब्ध कराया। गीता प्रेस गोरखपुर, हिंदी पत्र-पत्रिकाएं और चैनल, हमारी हिंदी फिल्में, विश्वविद्यालय व अन्य स्तरों/ संस्थाओं द्वारा आयोजित हिंदी संगोष्ठियां आदि ने हिंदी की व्यापकता और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक तंत्र युग में इंटरनेट व अन्य साधनों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग एक आशा को पल्लवित करता है। शासन द्वारा विभिन्न सॉफ्टवेयर निशुल्क उपलब्ध कराए गए हैं, जिससे सरकारी व अन्य स्तरों पर हिंदी का प्रयोग बढ़े। आवश्यकता सरकारी स्तर के साथ-साथ हमारी इच्छाशक्ति की भी है, हम चाहेंगे तो इस संपन्न हिंदी भाषा को उसके उचित स्थान पर देख सकेंगे। इतना सोचना कहां अनुचित है कि- विश्व में हिंदी का मान हो/ अर्थ नहीं अन्य का अपमान हो/ राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है/ भारती के भाल का सम्मान हो...!

पुणे, महाराष्ट्र
मोबाइल-9823546592/sunilkdeodhar@gmail.com

❑❑❑

डॉ. प्रमोद शुक्ल

विश्व में हिन्दी के बढ़ते चरण

विश्व में जितने राष्ट्र हैं उतनी भाषाएँ हैं। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी कोई न कोई भाषा अवश्य है जो संपूर्ण राष्ट्र में बोली और समझी जाती है। हमारे अपने राष्ट्र भारत में हिंदी ऐसी ही भाषा के रूप में विद्यमान है। उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक प्रत्येक प्रांत में हिंदी संपर्क के रूप में आसानी से बोली और समझी जाती है। राजनीतिक पेंच प्रसंगों के फलस्वरूप देश के स्वतंत्र होने के पचहत्तर वर्षों बाद भी हमारे सत्ताधारी भले ही इसे राष्ट्रभाषा घोषित न कर पाए हों किंतु अघोषित राष्ट्रभाषा के रूप में यह पूरे देश में स्थापित है। यह केवल भारत में ही नहीं अपितु अखिल विश्व में एक लोकप्रिय भाषा के रूप में बड़ी तीव्रता के साथ अग्रसर है। इसकी लोकप्रियता का मूल कारण है इसकी वैज्ञानिकता। यह एक वैज्ञानिक भाषा है जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी और पढ़ी भी जाती है। पहले इसने विश्व की तीन लोकप्रिय भाषाओं में अंग्रेजी और चीनी भाषाओं के बाद अपनी जगह बनाई। इसके बाद भी धीरे-धीरे इसने आगे बढ़ने का क्रम जारी रखा और वर्तमान में बोलने और समझने वालों की संख्या के आधार पर तो यह अंग्रेजी और चीनी से भी आगे निकलकर प्रथम क्रमांक पर पहुँचने के प्रयास में हैं।

कहा जा सकता है कि हिंदी के माध्यम से पूरे विश्व की जनता का भारतीय जनता के साथ संवेदनात्मक रिश्ता कायम होता जा रहा है। अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में हिंदी भाषा की प्रगति एवं विकास का मसौदा तैयार करके संसद में स्वतंत्र रूप से बजट तैयार किया गया है अत: स्पष्ट है कि विश्व में हिंदी का स्थान उसकी समाहार शक्ति और विशालता का परिचय ही है। विश्व के बाजार में भारत और दक्षिण एशियाई संगठन की बढ़ती भूमिका की पृष्ठभूमि में हिंदी के महत्त्व में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। आज दुनियाभर

के 30 देशों में सौ से अधिक विश्वविद्यालयों, भाषा संस्थानों तथा अध्ययन केंद्रों में हिंदी का पठन-पाठन रुचिपूर्ण तरीके से किया जा रहा है। पूरे विश्व के लगभग 137 देशों में बसे असंख्य हिंदी भाषियों के मन में क्या यह विचार कभी आ सकता था कि भारत से बाहर भी किसी देश की संसद हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार के लिए एक विधेयक पारित करके एक संस्था का निर्माण करेगी। जी हाँ यह बात मॉरिशस संसद की है जहाँ 12 नवंबर 2002 के अधिनियम के तहत विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की गई। भारत और मॉरिशस सरकारों के आपसी सहयोग से ही इस अभिनव संस्था का जन्म संभव हो पाया है। एक बहुत बड़ी उपलब्धि के रूप में इस सचिवालय की ओर से प्रति वर्ष विश्व हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है इसी के साथ- साथ विश्व हिंदी समाचार भी प्रकाशित किया जा रहा है। मॉरिशस के साहित्य सम्राट कहलाने वाले दिग्गज साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने हिंदी लगभग दो सौ कहानियाँ और चौदह उपन्यास लिखकर हिंदी के मान को ऊँचाइयाँ प्रदान की। 'लाल पसीना' उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है जो अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से अलंकृत है।

हिन्दी दिवस

'हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है।'

-महात्मा गांधी

अमेरिका में हिंदी की शिक्षा को वैज्ञानिक पद्धति से स्थापित किया गया है। इसे स्थापित करने में वहाँ के शिक्षा शास्त्रियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वास्तव में अमेरिका में हिंदी के प्रति आकर्षण तो सन 1893 से ही पैदा हो गया था जब शिकागो के धर्म सम्मेलन में भारत के धर्माचार्य स्वामी विवेकानंद ने अपने प्रबोधन का आरंभ अमेरिका के भाइयों और बहनों के संबोधन से किया था। सन 1958 में अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में हिंदी की शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या मात्र चौदह थी जो 1975 के आते-आते बढ़कर 380 हो गई थी। वर्तमान में तो यहाँ विश्वविद्यालयों में हिंदी एक प्रमुख रुचिकर विषय के रूप में स्थापित हो चुकी है।

इन देशों के अलावा हिंदी फीजी, इंडोनेशिया आदि अन्य देशों में भी लोकप्रिय होती जा रही है। हमारे अपने देश में भी कानून तथा चिकित्सा विज्ञान जैसे विषयों की शिक्षा अब हिंदी में दी जाने लगी है। विडंबना केवल यही है कि हिंदी के प्रति अध्ययन की रुचि घटती जा रही है। उसे किस तरह बढ़ाया जाए इस ओर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

अकोला, महाराष्ट्र

❑❑❑

आध्यात्म-

हृषीकेश शरण

मन से बड़ा कुछ नहीं

एक दिन भिक्षु चक्षुपाल जेतवन विहार में बुद्ध को श्रद्धा सुमन अर्पित करने आया। रात्रि में वह ध्यान साधना में लीन टहलता रहा। उसके पैरों के नीचे कई कीड़े-मकोड़े दबकर मर गए। सुबह में कुछ अन्य भिक्षुगण वहाँ आये और उन्होंने उन कीड़े-मकोड़ों को मरा हुआ पाया। उन्होंने बुद्ध को सूचित किया कि किस प्रकार चक्षुपाल ने रात्रि बेला में पाप कर्म किया था। बुद्ध ने उन भिक्षुओं से पूछा कि क्या उन्होंने चक्षुपाल को उन कीड़ों को मारते हुए देखा था। जब उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया तब बुद्ध ने उनसे कहा कि जैसे उन्होंने चक्षुपाल को उन कीड़ों को मारते हुए नहीं देखा था वैसे ही चक्षुपाल ने भी उन जीवित कीड़ों को नहीं देखा था। 'इसके अतिरिक्त चक्षुपाल ने अर्हत्व प्राप्त कर लिया है। उसके मन में हिंसा का भाव नहीं हो सकता था। इस प्रकार वह निर्दोष है।' भिक्षुओं द्वारा पूछे जाने पर कि अर्हत्व होने के बावजूद चक्षुपाल अंधा क्यों था, बुद्ध ने यह कथा सुनाई-

अपने एक पूर्व जन्म में चक्षुपाल आँखों का चिकित्सक था। एक बार उसने जान बूझकर एक महिला रोगी को अंधा कर दिया था। उस महिला ने वचन दिया था कि अगर उसकी आँखें ठीक हो जायेंगी तो वह अपने बच्चों के साथ उसकी दासी हो जाएगी और जीवन पर्यन्त उसकी गुलामी करेगी। उसकी आँखों का इलाज चलता रहा और आँखें पूर्णत: ठीक भी हो गईं। पर इस भय से कि उसे जीवन पर्यन्त गुलामी करनी होगी, उसने चिकित्सक से झूठ बोल दिया कि उसकी आँखें ठीक नहीं हो रही थीं। चिकित्सक को मालूम था कि वह झूठ बोल रही थी। अत: उसने एक ऐसी दवा दे दी जिससे उस स्त्री की आँखों की रोशनी चली गई और वह पूर्णत: अंधी हो गई। अपने इस कुकर्म के कारण चक्षुपाल कई जन्मों में एक अन्धे व्यक्ति के रूप में पैदा हुआ था।

टिप्पणी: हमारे सभी अनुभवों का सृजन विचार से होता है। अगर हम बुरे विचारों से बोलते हैं या कोई कार्य करते हैं तो उनसे कष्टदायक परिणाम प्राप्त होता है। हम जहाँ कहीं जाते हैं बुरे विचारों के कारण बुरे परिणाम ही पाते हैं। हम अपने दु:खों से तब तक मुक्त नहीं हो सकते जब तक हम अपने बुरे विचारों से ग्रस्त हैं।

❑❑❑

डॉ. प्रेरणा विलास उबाळे

विश्व व्याप्त हिन्दी भाषा और अगणित रोजगार

भारत बहुभाषी राष्ट्र है और यहाँ प्रत्येक प्रांत, राज्य की भाषा अलग है। यह उल्लेखनीय है कि ऐसा होने पर भी भारत में हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जो सभी लोगों को, प्रांतों को एकसूत्र में बाँध रखती है। राष्ट्र में एकता बनाए रखने में उसने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान समय में हिंदी संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषाओं में से एक है। भारत तथा विभिन्न देशों में लगभग 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं। साथ ही इसे समझनेवालों की संख्या भी इससे अधिक मतलब 90 करोड़ है।

भारतीय जनमानस ने हिंदी को "राष्ट्रभाषा" के रूप में स्वीकार कर लिया है। सन 1949 में हिंदी को "राजभाषा" अर्थात् "Official Language" के रूप में स्थान दिया गया है। इसके अनुसार संविधान के द्वारा सरकारी कामकाज, प्रशासन, संसद और विधान- मंडलों तथा न्यायिक कार्यकलापों के लिए स्वीकृत भाषा हिंदी है। पहले भले ही राजकीय प्रशासन के स्तर पर कभी संस्कृत, कभी फारसी और बाद में अंग्रेजी का प्रचलन रहा परंतु समूचे राष्ट्र के जनसमुदाय, जनमानस के आपसी संपर्क, संवाद-संचार, विचार-विमर्श, सांस्कृतिक एकता और जीवन-व्यवहार का माध्यम हिंदी ही रही है। स्पष्ट रूप से हम यह कह सकते हैं कि भारत में सर्वाधिक बोली, समझी और पढ़ी-पढ़ाई जानेवाली भाषा हिंदी है।

आज भारत की सभी पाठशालाओं, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। केवल भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में 40 से अधिक देशों में और लगभग 260 से अधिक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ी-पढ़ाई जाती है। अकेले अमरीका के 67 और चीन के 20 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। जिस प्रकार पूर्वी-पश्चिमी, बिहारी, राजस्थानी तथा पहाड़ी हिंदी उपवर्गों की सभी बोलियों के रूप में व्यवहार हिंदी का क्षेत्रीय संदर्भ है। राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में व्यवहार उसका राष्ट्रीय संदर्भ है और विश्व के कई देशों में उस का व्यवहार अंतरराष्ट्रीय सन्दर्भ में है। स्पष्ट रूप से इस दृष्टि से यह देखा जा सकता है कि हिंदी का क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय और अत्यंत व्यापक है। मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, गयाना, बांग्लादेश, श्रीलंका, मलेशिया, कंबोडिया आदि के साथ अमरीका, इंग्लैंड, सोविएत संघ, फ्रान्स, जापान, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। उदाहरण के रूप में बताया जाए तो अमरीका की कुछ पाठशालाओं ने फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन के साथ एक विदेशी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाना शुरू किया है।

हमारी राष्ट्रीय भाषा की लोकप्रियता और बढ़ते अंतरराष्ट्रीय महत्व के साथ-साथ हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगारों के अवसरों में भी जबरदस्त प्रगति हुई है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों में, हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। इसलिए केंद्र तथा राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों और इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, राजभाषा प्रबंधक के पदों की बड़ी संख्या है। अध्यापन के परंपरागत क्षेत्र के अलावा निजी टी.वी. और रेडियो चैनलों की कुछ वर्षों में वृद्धि होने के कारण परंपरागत पत्रिकाओं, समाचारपत्रों के अतिरिक्त ये नए क्षेत्र भी कई गुना रोजगार उपलब्ध करा दे रहे हैं। हिंदी मीडिया के क्षेत्र में संपादक, संवाददाता, रिपोर्टर, न्यूजरीडर, उपसंपादक, प्रूफरीडर, रेडियो जोकी, सूत्रसंचालक आदि की बहुत आवश्यकता है। सिनेमा, रेडियो और टी.वी. के क्षेत्र में पटकथा-लेखक, संवाद-लेखक,

गीतकार के रूप में व्यक्ति काम कर सकता है। सृजनात्मक हिंदी लेखन में कुशल व्यक्ति इन क्षेत्रों में काम कर सकते हैं।

अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के होने के बावजूद भी बढ़ती तकनीकी जरूरतों के कारण हिंदी की लोकप्रियता और आवश्यकता अधिक बढ़ रही है। माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनी भी हिंदी की सशक्तता देखकर हिंदी में ऑपरेटिंग सिस्टम शुरू कर चुकी है। अर्थात साहित्य के क्षेत्र से लेकर तकनीक तक हिंदी में कार्य हो रहा है।

व्यापक रूप में देखा जाए तो हिंदी में अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिए रोजगार के असंख्य अवसर उपलब्ध हैं। इन अवसरों की दीर्घ सूची यहाँ इस प्रकार दी जा सकती है अध्यापन (पाठशाला, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय- भारत और विदेश में), शैक्षणिक संस्थानों में अनुवाद का अध्यापन, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीयस्तर पर अनुवादक, दुभाषिये का काम, बहुराष्ट्रीय कंपनियों में और बाजार सर्वेक्षण के लिए, बीपीओ और कॉलसेंटर में विदेशी भाषा का अंतरण, पर्यटन उद्योग व होटल प्रबंधन, भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी विकास मिशन, फिल्म क्षेत्र, टी. वी. क्षेत्र, पत्रकारिता, अंशकालिक पत्रकारिता, साहित्यिक अनुवाद, विज्ञापन, जनसंपर्क एजन्सियाँ, फीचर लेखन, बधाई कार्ड लेखन, पोर्टल-वेबपत्रिकाओं के लिए लेखन और अनुवाद, सीडैक-हिंदी सोफ्टवेयर निर्माण, केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी अनुवादक, सरकारी कार्यालयों और बैंक में राजभाषा अधिकारी, विभिन्न कार्यालयों में सहायक प्रबंधक एवं प्रबंधक, प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रोनिक मीडिया में संपादक, उपसंपादक, प्रूफ-रीडर, रिपोर्टर, विदेशों में हिंदी पढ़ाने हेतु अध्यापक, रेडियो जोकी, सूत्रसंचालक, गीतकार, हिंदी प्रकाशनों में विभिन्न कार्यों के लिए हिंदी का कार्य, फिल्म डबिंग, प्रतियोगी परीक्षाएँ, संवाद-लेखक, फ्री-लान्सिंग, कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन, न्यायिक सेवा, रेल प्रशासन में हिंदी प्रबंधक और अनुवादक, विदेश मंत्रालय, खेल क्षेत्र में समालोचन, साहित्यिक वेबसाइट-निर्माण, साहित्यशिल्पी, अच्छी खबर, हैप्पी हिंदी जैसे ब्लॉग-लेखन में हिंदी से संबंधित कार्य।

उपर्युक्त तमाम क्षेत्रों में हिंदी विषय में अध्ययन कर रोजगार पाए जा सकते हैं। हमारी राष्ट्रीय भाषा की लोकप्रियता और बढ़ते अंतरराष्ट्रीय महत्व के साथ-साथ हिंदी भाषा में जबरदस्त प्रगति हुई है। अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के होने के बावजूद बढती तकनीक और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनी भी हिंदी की सशक्तता देखकर हिंदी में ऑपरेटिंग सिस्टिम शुरू कर चुकी है। अर्थात साहित्य के क्षेत्र से लेकर तकनीक तक हिंदी में काम हो रहा है।

हिंदी में रोजगार पाने से संबंधित विभिन्न उपाधियाँ पाना भी महत्वपूर्ण है। हिंदी विभाग, मॉडर्न महाविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र में उपर्युक्त अवसरों के लिए अनेक अच्छे पाठ्यक्रम निर्माण किए गए हैं। उपर्युक्त तमाम क्षेत्रों के कारण हिंदी पढ़नेवाले छात्र इसे करियर चुनकर अपना भविष्य सुरक्षित बना सकते हैं। साथ ही अपने देश की भाषा का संवर्धन भी कर सकते हैं। आवश्यकता केवल यह है कि विभिन्न प्रकार से अद्यतन ज्ञान पाते हुए लगन और मेहनत से प्राप्त अवसरों का सही दिशा में लाभ उठाएँ।

सहायक प्राध्यापक अध्यक्ष, हिंदी विभाग मॉडर्न कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय (स्वायत्त)
शिवाजीनगर, पुणे-05 (महाराष्ट्र)
संपर्क नं.- 7028525378
Email : preranaubale2016@gmail.com

❑❑❑

वीनु जमुआर

व्यक्त-अव्यक्त

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल'

आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चन्द्र की इन पंक्तियों में निहित अर्थ से हम सभी परिचित हैं।

अक्षरों में, शब्दों में, वाक्यों में व्यक्त भाषा की बात तो अक्सर होती है, विशेष कर राष्ट्रभाषा दिवस या राजभाषा दिवस के रूप में चर्चा। इन चर्चाओं के माध्यम से अनेक विद्वज्जनों के मनन-चिंतन से उपजे विचारों की अभिव्यक्ति हमें गुनन-मंथन करने के लिए सजग करती है।

इसमें कोई दो मत नहीं कि अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए शब्द एवं शब्दों की सार्थकता हेतु अनुरूप भाषा विन्यास की आवश्यकता होती है। सर्वज्ञात है , मातृभाषा मनुज की पहचान है तो राष्ट्रभाषा किसी भी राष्ट्र के सिर का मुकुट होती है।

आज हम यहाँ पहले मातृभाषा की बात करते हैं। इस दृश्य की कल्पना करें-

अस्पताल का जच्चा-बच्चा वार्ड है। परिचारिका सद्यप्रसूता माँ की गोद में लाकर नवजात शिशु को देती है। किचमिच करता शिशु अपनी आँखें हल्के से उघार माँ को देखता है, रोने जैसी शक्ल बनाता है और पहली बार माँ बनी वह नवयौवना समझ जाती है कि बच्चे को स्तनपान कराना है ...मातृभाषा की पहली बारहखड़ी!

सृष्टि की संरचना अभेद्य है। गहनता से, सूक्ष्मता से देखा जाए तो प्रकृति के कण-कण में बसे भाषा को पढ़ने का प्रयास हम कर सकते हैं। हमने अभी शिशु के नयनों की भाषा की बात की। शरीर के प्रत्येक अंग की अपनी कहानी होती है, कार्य करने की शैली एवं उसी शैली में अंतर्निहित भाषा होती है।

पैर पटक लिए तो उसका अर्थ , हाथों के क्रिया-कलाप द्वारा व्यक्त भाव का आप तक पहुँचना आदि अद्भुत भाषाई उदाहरण कहे जा सकते हैं।

हमारी पूर्व पीढ़ियों की दादी-नानीयाँ, पुराने वैद्य जी, उस कालखंड के शिशु विशेषज्ञ आदि को तो सिर्फ बच्चे के हाव-भाव एवं क्रंदन के आरोह-अवरोह से कष्ट समझ जाने की महारथ हासिल थी। तब न इतने प्रकार के लैब टेस्ट करवाये जाते थे न ही आज जैसी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। भावों को व्यक्त करने की यह भाषा कम सशक्त तो नहीं कही जा सकती है!

जिस प्रकार क्रंदन से ध्वनि की भाषा को समझा जा सकता है उसी प्रकार प्रेम, स्नेह, खुशी की, हँसी की ध्वनि का स्मरण कीजिए। इन ध्वनियों की भाषा क्या कहती है? गुस्से की, चिंता की, लड़ने के स्वर की भाषा में निहित भाव का सोचें, बिना कुछ लिखे-बिना कुछ पढ़े सभी समझ में आ जाता है।

अगर आप किस्मत वाले हैं, कंक्रीट के जंगलों से घिरे हुए नहीं हैं, आस-पास वृक्षों की सुंदर सघन हरियाली है तो सुबह-सुबह पंछियों की चहचहाहट को ध्यान लगा कर सुनिए। हम मनुष्य आपस में क्या बातचीत करेंगे जितनी अपनी-अपनी भाषा में वे बतियाते हैं। दुनिया-जहान की बातें गुँथी होती हैं उस कलरव में।

छोटी-सी, श्रीराम जी के स्नेह से पगी धारियोंवाली देह पर लंबी मोटी रोएँदार पूँछवाली गिलहरी जिसे 'रुक्खी' भी कहते हैं, क्या ही आँखें मटका-मटका, पूँछ ऊपर-नीचे हिलाते

हुए डाली-डाली फिरती हुई गप्पे मारती है...भला कौन कह सकता है- इनकी भाषा समृद्ध नहीं?

मैना, तोता द्वारा उत्तेजना के पलों में उनके स्वर या खतरों से आभासित ध्वनि भी भाषा ही तो है। नर कोयल की मादा कोयल को आमंत्रित करती कुहू-कुहू...आदि सृष्टि के अद्‌भुत भाषाई भंडार हैं जिन्हें सुन कर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता हम मनुष्यों को प्राप्त है।

अब ध्वनि के विपरीत मौन की भाषा! विचार करें-

भोर की बेला है, जलधर गगन पर छाए हैं। बयार की गति मंद है। आदित्य के आने की बाट जोहते हुए चुपचाप समुद्र तट पर आप टहल रहे हैं। विचारों की श्रृंखला मष्तिष्क में आ-जा रही हैं कि-

सागर की लहरों की शांत सरसराहट का धीरे से आना और तट को चूम कर वापस जाना...संग लाए कुछेक खुली तो कुछ बंद सीपियों को छोड़ जाना! मानो जीवन की यात्रा में पाए जानेवाले कुछ बंद दरवाजे, कुछ खुले दरवाजे। सफलता-असफलता, सुख-दुख का संदेश देता हुआ!

सुबह शांत पहर की भाषा- बिना कुछ बोले मन सुकून से भर देता है।

रोजमर्रे के जीवन में भी मौन के महत्व, उसके अर्थ से हम परिचित हैं। हजारों उदाहरण दिए जा सकते हैं। मूक-बधिर की मौन वाणी की अभिव्यक्ति में शामिल भाषा उनकी जीवन रेखा से कम तो नहीं।

इशारों की भाषा सोचिए- प्रेम प्रसंग सिनेमा के कैनवास के ही नहीं व्यक्तिगत जीवन के भी। शम्मी कपूर तथा शर्मिला टैगोर पर चित्रित- 'इशारों-इशारों में दिल देनेवाले बता ये हुनर तूने सीखा कहाँ से...' गीत बरबस याद आने लगता है। कहना नहीं होगा इशारे पर एक लंबी कतार है गीतों की।

भारत विविध क्षेत्रीय भाषाओं का देश है। यहाँ की विविधता में भी एकता का यह उदाहरण देखिए-

ग्रीष्म ऋतु की दोपहरिया थी। बच्चों की चौपाल लगी थी। आम्रकुंज में मंजरियाँ भरी थीं। कोकिल की कुहकारी भी थी। तभी किसी बालक ने कहा- सुनो कोकिल की 'मातृभाषा' कितनी मीठी लगती है।

किसी दूसरे ने अपनी बात कही- मेरी मातृभाषा बंगला है वह भी इतनी ही मिष्टी लगती है।

उसी क्षण कह उठा मैथिलभाषी- मित्रो! मिथिला की भाषा सुन लो राममय तुम हो जाओगे जो तुम मैथिल भाषा सुन लो। मगही, भोजपुरी, संथाली, खोरठा, उड़िया एवं छत्तीसगढ़ी, कोंकणी, तुलु, मलयालम, तेलगू, कन्नड आदि सबने अपनी-अपनी कथा कही। उसी झुंड में एक बालक था, दुबला पतला संकोची-सा, तत्काल वह भी बोल उठा- जन्म लिया था जब मैंने नाभि की जब नाल कटी थी, दर्द हुआ था मुझको तब तो- मैंने आँखें खोली थीं, महसूस किया था स्वयं को सुरक्षित। माँ की गोद में लिपटा था। आँखों में उनके प्यार भरा था। पढ़ पाया था मैं उस भाषा को।

मातृभाषा का पहला अक्षर था उनके नयनों में अंकित। दर्द नाल का भूल गया था। मातृ भाषा की पहली शिक्षा उस दिन ही मैं पा गया था...।

मातृभाषा अर्थात प्रेम की भाषा! लगभग हजार वर्ष पूर्व देवभाषा संस्कृत की उत्तराधिकारी के रूप मे जन्मी हिंदी एक सफल भाषा के रूप में कलकल प्रवाहित हो रही है। कुछेक विद्वानों के मतानुसार अवहट्ट से हिन्दी की उत्पत्ति मानी गई है।

हिंदी एक सशक्त और सबसे अधिक बोली जाने वाली समृद्ध भाषा है। अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ एकजुट हो इसका श्रृंगार करती हैं, इसे सुशोभित करती हैं।

हिंदी के अतुल्य शब्द भंडार हमारे वाणी को विस्तार देते हैं। भावों को सृजन के पन्नों पर उतरने में सहायक होते हैं।

वाणी की जब बात होती है तो अंतर्मन में कबीर झंकृत होने लगते हैं जिनके दोहे आज भी सामायिक है, अनुकरणीय है।

कबीर कहते हैं- **'ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोये, औरन को शीतल करे आपहुँ शीतल होये।'**

तो आइए! हम सभी मिलकर हिंदी साहित्य के अनुपम समृद्ध भंडार का उपयोग करें, अपनी वाणी मधुर बनाएँ रखें। भाषा को सुदृढ़ करने में सहायक बनें, इसका सम्मान करें। आज की युवा पीढ़ी को, बच्चों को अपनी मातृभाषा की महत्ता समझाएँ, अपने ही घरों से इस अभियान का शुभारंभ करें।

15 वृंदावन, शिवकला सोसायटी
मुकुंद नगर, पुणे-411037
संपर्क- 8390540808

❑❑❑

डॉ. लतिका जाधव

अक्षर लिखें, अक्षर पढ़ें

विश्व का विकास और ज्ञान की परंपरा जीवित रखने के लिए, अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस प्रतिवर्ष 8 सितंबर को मनाया जाता है। हम आज भी हमारे आसपास मेहनत-मजदूरी करने वाले लोगों को देखेंगे तो काफी हद तक इन श्रमजीवी वर्ग की महिलाओं का और बच्चों का पाठशालाओं से दूर हो जाने का कारण गरीबी ही दिखाई देता हैं। इन सबको आगे पढ़ने का, जीवन को समझने का अधिकार साक्षरता से ही मिलेगा इसलिए अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस विश्व में मनाया जाता है। साक्षरता पर सबका अधिकार है, यह समझना और समझाना भी बेहद जरूरी है।

इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस 'बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देना आपसी समझ और शांति के लिए साक्षरता' इस विषय के लक्ष्य से मनाया जा रहा है। बहुभाषी दृष्टिकोण से आपसी सामंजस्य बढ़ेगा तथा विश्व शांति को जतन करना आसान होगा। विश्व में आज शांति की जरूरत है। इस बात को इस वर्ष के अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस से जोड़ा गया है।

तो विश्व को जोडने वाला 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाने की शुरूआत कैसे और क्यों हुई, इस बात को समझने के लिए हमें अर्धशतक पीछे जाना होगा। विश्व में ज्ञान की वृद्धि और विकास करने के लिए साक्षरता ही पहला कदम है यह बात विश्व के ज्ञानी समझ चुके थे। सन 1965 में तेहरान (ईरान) में शिक्षा मंत्रियों का विश्व संमेलन निरक्षरता को खत्म करने के लिए 8 से 19 सिंतबर को हुआ था। यूनेस्को ने (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन)1966 में 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस घोषित किया। उसके बाद यूनेस्को के सदस्य देशों में 8 सितंबर 1967 से प्रतिवर्ष 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाया जाने लगा है।

विश्व में साक्षरता बढ़ाने के लिए इस वर्ष 58वां 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाया जा रहा है। साक्षर बनने के लिए आयु की कोई सीमा नहीं हैं, यह संदेश भी यहाँ अंतर्भूत है। निरक्षरता खत्म करने के लिए विश्व भर में प्रौढ़

शिक्षा जैसे कार्यक्रमों के द्वारा वातावरण निर्माण किया जाता रहा है। हम सभी इस साक्षरता प्रसार के आयोजनों में शामिल होकर अपने उत्तरदायित्व को निभाना जरूरी समझें, यह संदेश भी इस दिवस पर पूरे विश्व को दिया जाता है।

साक्षरता ही ज्ञान मार्ग का प्रथम चरण है। हर व्यक्ति मौखिक और लिखित रूप से शिक्षा को ग्रहण करता हैं। लेकिन निरक्षरता से लिखित सामग्रियों को पढ़ना असंभव होता है। साक्षरता का पाठ हर व्यक्ति को अपनी पहचान मजबूत बनाने में सहायता करता है। साक्षरता से व्यक्ति का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। साक्षरता से ही जीवन में सकारात्मक बदलाव आता है, यह संदेश इस अभियान के द्वारा विश्व में प्रसारित किया जाता है।

लेकिन इक्कीसवीं सदी में आज तो हम आनलाईन प्रणाली से कामकाज कर रहे हैं। जन्म का दाखिला लेने से तो अन्य बैंक, विवाह आदि के कामकाजों के लिये हमें आनलाईन अर्जी तथा स्कैन कागजात जोड़ने पड़ते हैं। पर्यावरण की रक्षा के लिए हम कागजी बचत करनेवाला लैपटॉप स्क्रीन, मोबाईल फोन हमारे निजी क्षेत्र के कामकाजों में इस्तेमाल कर रहे हैं। स्क्रीन से जुड़े काम को स्वयं करना बेहद ही जरूरी है। इसलिए सभी को तकनीकी साक्षर करना भी बेहद जरूरी है।

साक्षरता के कारण व्यक्ति अपनी भाषा जो बोलता है, लिख सकता है। इतना ही नहीं हमें कार्यालयीन व्यवहारों के लिए जरूरी इंग्लिश भी जानने तथा सीखने की इच्छा होने लगती है। इसलिए साक्षरता के प्रति सबको जागरूक करना, हर शिक्षित नागरिक का सबसे बड़ा कर्तव्य है। साक्षरता के कारण ही हमारे समाज, हमारे देश का विकास और उन्नति संभव है। इसे समझने के लिए हमारा इतिहास साक्षी है।

हिंदुस्तान की प्रथम महिला शिक्षिका के रूप में सावित्रीबाई फुले जी का बड़ा योगदान रहा है। 1 जनवरी 1848, भिडेवाडा, पुणे में सावित्रीबाई फुले ने लडकियों के लिए पाठशाला शुरू कर स्वयं ही उनको पढ़ाना शुरू किया था। आज यह बात इसलिए आश्चर्य जनक लग रही है कि फुले दंपत्ति ने यह कार्य करीबन 175 साल पहले शुरू किया था। हिंदुस्तानी स्त्रियों के विकास के लिए यह पाठशाला अज्ञान की श्रृंखलाओं को तोड़ने मे कमाल की सार्थक साबित हो गई। दूसरी तरफ आज भी विश्व में जो निरक्षरता का स्वरूप

दिखाई देता है, वह देखकर साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए हमें 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाना पड़ रहा है।

यहां इस बात को भी समझना चाहिए कि, अब साक्षरता अभियान में काफी चुनौतियाँ प्रविष्ट हो गई है। वर्तमान में हम जिस मोबाईल, लैपटॉप जैसे उपकरणों से अपने आप को विश्व से जोड़ रहे हैं। इन उपकरणों द्वारा ही आज सबको फंसाने के लिए फर्जीवाड़ा, सायबर लूट जैसे गोरखधंधे भी चल पड़े हैं। निरक्षरता से ग्रस्त लोगों को हमें इस तकनीकी शिक्षा के साक्षर बनाना है। पूरे विश्व को तकनीकी शिक्षा से अवगत बनाना आज के साक्षरता दिवस का लक्ष्य है।

विश्व में साक्षरता अभियान के अंतर्गत अनेकों कार्यशालाओं, संगोष्ठियों का आयोजन तथा अन्य जागरुकता अभियान भी चलाए जाते हैं। जो आगे भी निरंतर चलाये जायेंगे। तो उम्मीद है कि हम सब भी इस 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता अभियान' में अपना योगदान देकर अपना उत्तरदायित्व निभाने का प्रयास करेंगे।

हमें युद्ध नहीं, शांति चाहिए।
किताबें और कलम चाहिए।
हम लिखेंगे, हम पढ़ेंगे।
हमारे विश्व को साक्षर करेंगे।

पुणे (महाराष्ट्र)
संपर्क- 9595983100

❑❑❑

डॉ. संतोष धोत्रे

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस प्रतिवर्ष 8 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिवस सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को गति प्रदान करने के लिए तथा साक्षरता और शिक्षा के महत्व को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। 1965 में यूनेस्को द्वारा घोषित किया। यह दिन मनुष्य जीवन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विश्व समुदायों और समाज को बदलने के लिए साक्षरता की शक्ति की याद दिलाता है।

साक्षरता मानव का मौलिक अधिकार है। जो लोगों को आत्मविश्वास के साथ दुनिया को आगे बढ्ने के लिए आवश्यक है। सामाजिक स्तर पर निर्णय लेने और अपने समुदायों में पूरी तरह से संम्मिलित होने के लिए आवश्यक है। साक्षरता आर्थिक विकास, सामाजिक गतिशीलता और लैंगिक समानता का एक प्रमुख परिचालक है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। हाल के दशकों में हुई प्रगति के बावजूद, साक्षरता वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। दुनिया भर में 77 करोड़ से अधिक वयस्कों में बुनियादी साक्षरता कौशल की कमी है।

निरक्षरता के परिणाम दूरगामी हैं। गरीबी, असमानता और सामाजिक बहिष्कार के चक्र को बनाए रखते हैं। निरक्षर व्यक्तियों को शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँचने में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उनका शोषण होने की संभावना होती है और हाशिए पर जाने के कारण अधिक संवेदनशील होते हैं। कई विकासशील देशों में साक्षरता दर चिंताजनक रूप में कम है। जो आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति में बाधा बन गया है।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस इन असमानताओं को दूर करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण पहल है। साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए आजीवन सीखने के लिए प्रेरित करता है। साथ ही साक्षरता बढ़ाने हेतु कार्रवाई करने का आह्वान करता है। यह दिवस आधारभूत कौशल को मजबूत करने में साक्षरता और संख्यात्मकता को बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करता है। यह कौशल व्यक्तियों के लिए बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने, नए कौशल हासिल करने और 21वीं सदी की जटिलताओं के सरह आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं।

दुनिया को अधिक साक्षर बनाने के लिए, हमें समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। साक्षरता दरों की असमानताओं को दूर करना चाहिए और सभी समाज के लोगों के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसके लिए सरकारों, नागरिक समाज और व्यक्तियों को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की जरूरत है। सरकारों को शिक्षा के बुनियादी ढांचे, शिक्षक प्रशिक्षण और साक्षरता कार्यक्रमों में अधिक मात्रा में निवेश करना चाहिए। जबकि समाज के नागरिक संगठनों को समुदाय-आधारित पहलों और वकालत के प्रयासों का समर्थन कर उसे आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए।

व्यक्ति स्वयंसेवा करके, साक्षरता कार्यक्रमों में दान देकर और साक्षरता जागरूकता को बढ़ावा देकर भी बदलाव ला सकते हैं। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों, ऑनलाइन संसाधनों और मोबाइल लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से तकनीक साक्षरता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है। जिससे निम्न प्रकार के बदलाव संभव है-

स्वास्थ्य परिणामों पर साक्षरता का प्रभाव होगा। साक्षर व्यक्तियों द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने और उपचार योजनाओं का पालन करने की अधिक संभावना होती है।

स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ावा देने में साक्षरता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। साक्षर महिलाओं द्वारा किसी भी प्रकार में भाग लेने और अपने जीवन के बारे में उचित निर्णय लेने की अधिक संभावना होती है।

साक्षरता के आर्थिक लाभ, साक्षर व्यक्तियों द्वारा बेहतर वेतन वाली नौकरियाँ हासिल करने और आर्थिक विकास में योगदान करने की अधिक संभावना होती है।

नागरिक सहभागिता और लोकतंत्र को बढ़ावा देने दृष्टि से साक्षरता का महत्व है। साक्षर व्यक्तियों के राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने और अपने अधिकारों का प्रयोग करने से लोकतंत्र मजबूत होता है।

अंत में कह सकते हैं कि अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस साक्षरता की परिवर्तनकारी क्षमता का एक शक्तिशाली अनुस्मारक है। जैसे कि हम अधिक साक्षर दुनिया के लिए प्रयास करते हैं, हमें समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। साक्षरता दरों में असमानताओं को दूर करना जरूरी है और सभी व्यक्तियों के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना चाहिए। हम सभी समाज और विश्व के लिए एक साथ काम करके अधिक न्यायसंगत, समृद्ध भविष्य बनाने के लिए साक्षरता की शक्ति का सही रूप में उपयोग कर सकते हैं।

असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग, फर्ग्युसन महाविद्यालय, पुणे- 411004
मो. 9423218462
Email : santosh.dhotre@fergusson.edu

❑❑❑

मॉडर्न महाविद्यालय, पुणे

हिंदी विभागीय ग्रंथालय

एवं

हिंदी भाषा प्रयोगशाला

के उद्घाटन समारोह में

सहकार्यवाहक-

डॉ. ज्योत्सना एकबोटे,

ख्यात साहित्यकार-

डॉ. दामोदर खड़से,

हिंदी विभागाध्यक्ष-

डॉ. प्रेरणा उबाले

आसरा मुक्तांगन के प्रधान संपादक

साहित्यकार **डॉ. रमेश मिलन** को सम्मानित करते हुए!

घनश्याम अग्रवाल

मैं जिन्दा हूँ अभी...

'एकलव्य का अंगूठा'

द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अंगूठा मांग लेना, उस युग की विषमता की पराकाष्ठा थी। जिस किसी ने भी इस कथा को सुना या पढ़ा, उसे ये अन्याय असह्य हो उठा। यहाँ तक कि एक नेता को भी।

नेताजी ने सोचा, अन्याय तो हम भी करते हैं, पर इतना नहीं। अब जमाना बदल गया है। दो वर्गों के बीच विषमता दूर होनी चाहिए, समाजवाद आना चाहिए। इसके लिए क्रान्तिकारी कदम यह होगा कि मैं अब द्रोणाचार्य का अंगूठा काटकर, एकलव्य को लाकर दूँगा। तभी हम सच्चे समाजवाद की ओर बढ़ेंगे। नेताजी के ये क्रान्तिकारी विचार सुनकर एकलव्य व उसके साथियों ने पूछा- "मगर ये कैसे संभव है?"

"इसके लिए आपको मेरी एक मदद करनी होगी।"

"कैसे? क्या?"

"एक तो अंगूठा काटने के लिए एक हीरे जड़ी कटार चाहिए और दूसरे आप लोगों का वोट चाहिए।"नेताजी ने कहा।

"उससे क्या होगा?"

"देखो भई, द्रोणाचार्य कोई एकलव्य तो है नहीं कि मांगते ही अपना अंगूठा काटकर एकलव्य को दे जाएगा। वह तो आयेगा नहीं। हमीं को उसके पास जाकर उसका अंगूठा काटना होगा। द्रोणाचार्य बड़ा आदमी है। राजमहलों में उसका आना-जाना है। बड़े-बड़े राजपुत्रों के संग उसका उठना-बैठना है। मेरी पहुंच वहाँ तक नहीं है। अब मैं जब द्रोणाचार्य के पास ही नहीं पहुंच सका तो उसका अंगूठा कैसे काटूँगा? तुम लोग अपना वोट देकर मुझे राजमहल में पहुंचा दो। मैं मौका देखकर अंगूठा काट लूंगा। यह मेरा वादा रहा।"

नेताजी की बात एकलव्य और उसके साथियों को जँची। उन्होंने झट चंदा कर एक हीरे जड़ी कटार नेताजी को भेंट की और वोट भी दिया। नेताजी तुरंत राजमहल पहुंच गए। जाते ही वे अपनी हीरे जड़ी कटार दिखाते हुए दरबार में जोर से बोले- "मैंने जनता से वादा किया है कि मैं समाजवाद लाऊँगा। अब धाँधली नहीं चलेगी। मैं इस कटार से द्रोणाचार्य का अंगूठा काटकर ही मानूँगा।"

नेताजी का जोश देख, द्रोणाचार्य ने खुद खड़े होकर नेताजी से कहा- "आपकी बात सही है। अब जमाना बदल गया है। अब हम सब एक हैं।"

हमें अपने अतीत पर शर्मिंदगी है। आप हमारा अंगूठा जरूर काटें, मगर इतनी जल्दी क्या है? अभी-अभी तो आए हो। बैठो कुछ देर विश्राम करो। यह कहकर द्रोणाचार्य ने सोमरस का एक गिलास नेताजी की ओर बढ़ाया और कहा- "इन्द्र ने खासतौर पर अपने व्यक्तिगत कोटे से भिजवाई है।"

नेताजी ने थकान दूर की। अब वे रोजाना ही द्रोणाचार्य के साथ रहते और दिनभर की थकान को रोज रात इन्द्र के व्यक्तिगत कोटे से दूर करते। बीच-बीच में अंगूठे की याद भी दिलाते रहते। एक दिन अचानक बोल पड़े- "फिर चुनाव घोषित होनेवाले हैं। मुझे एकलव्य की बस्ती में जाना होगा। अत: मैं अबअंगूठा काटे बिना नहीं मानूँगा। अगर अब भी समाजवाद नहीं आया तो फिर कभी नहीं आयेगा।"

"तुम ठीक कहते हो, अब हमारा अंगूठा कट ही जाना चाहिए। मगर एक बात बताओ, ये अंगूठा कटवाने का खेल कब तक चलेगा? नहीं-नहीं! मैं अपना अंगूठा कटवाने के पहले एक बार एकलव्य से मिलना चाहूँगा। उसे आप यहीं ले आइए। मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि अब जमाना बदल गया है। तुम देखना, हम अब एकलव्य से कैसा व्यवहार करते हैं? रही बात अंगूठे की, तो वह हम देने को तैयार हैं ही। पर उसके पहले मन का मैल दूर होना चाहिए।"

नेताजी द्रोण की यह बात सुन प्रसन्न हो गए। यही तो

वे चाहते थे। वे फौरन एकलव्य की बस्ती में गए और एकलव्य को अपने साथ राजमहल ले आए। द्रोणाचार्य अपने साथियों के साथ स्वागत करने खड़े ही थे।

द्रोणाचार्य ने आगे बढ़कर एकलव्य को गले लगाया और कहा– "पुरानी बातें भूल जाओ। हम सब एक हैं।" द्रोणाचार्य ने एकलव्य के गले में हाथ डाल फोटो खिंचवाई। फिर नेता से कहा– "बताओ, हम में एकलव्य में कोई फर्क रहा?"

"नहीं" नेताजी गद्‌गद् हो बोले। इसके बाद वे सब एक ही रथ पर बैठ राजमहल की ओर चल पड़े। वहाँ एकलव्य को शाही पोशाक पहनाई गई। शाम का भोजन द्रोणाचार्य और एकलव्य ने एक ही थाली में किया। इस दृश्य की तस्वीर ली गई। तस्वीर दिखाते हुए द्रोण ने नेता से पुनः पूछा– "क्या अब भी तुम्हें मुझमें और एकलव्य में फर्क दिखाई दे रहा है?"

"नहीं," तीनों का सम्मिलित स्वर गूँज उठा। फिर तीनों के गिलास होठों से बातचीत करने लगे। एकलव्य इन्द्र के व्यक्तिगत कोटे का ऐसा सोमरस पहली बार ले रहा था। कुछ ही देर में तेज नींद के झोंके खाता वह वहीं लुढ़क गया। द्रोण और नेताजी ने उसे सहारा देकर पलंग पर लिटा दिया। द्रोण ने अपने हाथों एकलव्य के जूते खोले, उसे चादर उढ़ाई। और पुनः चौकी पर आ बैठे। समाजवाद की बातें चलने लगी।

बातों ही बातों में नेताजी को ताव आ गया। वे अपनी हीरे जड़ी कटार दिखाकर बोले– "और तो सब ठीक है, पर जब तक मैं आपका अंगूठा न काट लूँ, समाजवाद कैसे आयेगा? मुझे जल्दी है।"

"हाँ-हाँ काट लेना अंगूठा, पर यह गिलास तो खत्म करो।" नेताजी ने गिलास खत्म किया तो द्रोण पुनः बोले– "तुम्हें अंगूठा ही काटना है ना तो काट लो अंगूठा, वह रहा!" कह द्रोण ने पलंग पर सोए एकलव्य के लटकते हाथ की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मगर ये तो एकलव्य का अंगूठा है। मुझे आपका अंगूठा चाहिए।" नेता ने कहा।

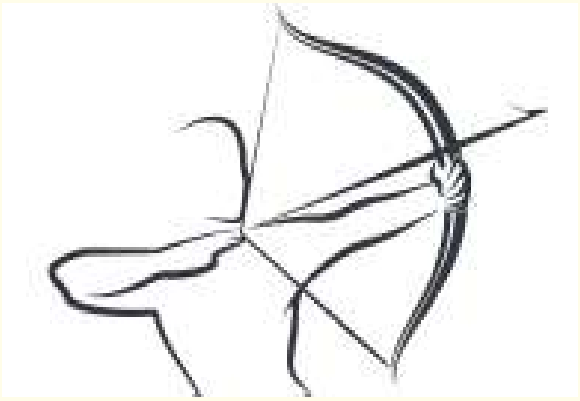

"मेरा अंगूठा भी काट सकते हो। पर तुम मेरा यह हाथ देख ही रहे हो ना। इस हाथ में एक कलश है, जिसमें सोमरस भरा है– वही इन्द्र के व्यक्तिगत कोटेवाला। मेरा अंगूठा काटोगे, तो यह कलश गिर जायेगा। इन्द्र नाराज ना हो जाएँ कि उनके व्यक्तिगत कोटे के सोमरस का यों अपमान हो रहा है और

वो हमें सोमरस देना ही ना बंद कर दे। इसलिए कहता हूँ, वही अंगूठा काट लो। चाहो तो मेरा काट सकते हो, वैसे अब मुझमें और एकलव्य में क्या फर्क रहा? तुम दिनभर से देख रहे हो, एकलव्य मेरे साथ है। मेरे साथ खाता-पीता है। मेरी शैया पर विश्राम भी कर रहा है। अब हम दोनों एक हैं। हम दोनों में कुछ भी फर्क नहीं। फिर मेरा अँगूठा काटे क्या, एकलव्य का अँगूठा काटे क्या! बात तो सिर्फ सोमरस..."

"ठीक है, अब मैं सब समझ गया", कहकर नेता ने हीरे जड़ी अपनी कटार निकाली। एक क्षण द्रोणाचार्य के हाथ की ओर देखा जो कीमती कलश थामे था। दूसरे क्षण सोए एकलव्य का लटकता हाथ देखा, जो बिलकुल खाली था। द्रोणाचार्य के घर में, उन्हीं की शैया पर लेटे एकलव्य के हाथ का अँगूठा उन्हें द्रोणाचार्य के अँगूठे जैसा लगा। वे हीरे जड़ी कटार ले आगे बढ़े और कटार का हीरा, कटार से उछलकर नेताजी की जेब में इस तरह से आ पड़ा जैसे एकलव्य की हथेली से उसका अँगूठा उछलकर फर्श पर आ पड़ा था।

द्रोणाचार्य और नेताजी एक-दूसरे की ओर देखने लगे। द्रोणाचार्य तुरन्त एक पोस्टरनुमा कागज ले आए। कागज पर लिखा था– "इस गुरुपूर्णिमा पर हमने समाजवाद की ओर पहला कदम बढ़ा लिया है।" वाक्य के नीचे लिखा था– हस्ताक्षर और उसके नीचे लिखा एकलव्य!

एकलव्य पढ़ा-लिखा नहीं था। वह हर युग में 'अँगूठा बहादुर' ही रहा। इसलिए नेताजी और द्रोण ने फर्श पर पड़े एकलव्य के अँगूठे को उठाया, स्याही में डुबोया और हस्ताक्षर के नीचे, उस जगह लगा दिया जहाँ 'एकलव्य' लिखा था।

❑❑❑

रामहित यादव

उत्तिष्ठत जाग्रत

कठोपनिषद में आया यह वाक्य स्वामी विवेकानंद के जीवन का मूल मंत्र था। कठोपनिषद में कहा गया है कि 'उठो, जागो और श्रेष्ठ व्यक्तियों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करो। अब प्रश्न उठता है कि श्रेष्ठ कौन है? गुण, विशेषताओं से युक्त कोई भी प्राणी हमसे श्रेष्ठ होता है। हम कुछ न कुछ सभी प्राणियों से सीख सकते हैं। भारतीय मनीषा में तो संपूर्ण प्रकृति को ही गुरु माना गया है, क्योंकि प्रकृति की प्रत्येक वस्तु से हम कुछ न कुछ सीख सकते हैं। फूलों से मुस्कुराना, नदियों से सदैव आगे बढ़ना, भौरों से गुनगुनाना, सूर्य से सब को प्रकाशित करना, पेड़ों से दान करना सीखते ही हैं। हमारे आसपास हमारे माता-पिता, परिजन, शिक्षक एवं गुरु होते हैं। यदि हम इनकी बातें मानकर उनके बताए मार्ग का अनुसरण करें तो निश्चित ही अपने अच्छे व्यक्तित्व एवं भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

स्वामी विवेकानंद जी ने भी यही किया था। बालक नरेंद्र ने स्वयं को गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के चरणों में समर्पित कर दिया था। वे गुरु के बताए मार्ग पर चले, उनकी दी गई शिक्षाओं, सीखों को माने, अनुसरण किए और अपनी लगन, निष्ठा एवं विवेक से विश्व में आनंद का संचार किए। उनका कहना था- 'उठो, जागो और ध्येय की प्राप्ति तक रुको मत।'

पर इस ध्येय की प्राप्ति इतनी आसान है क्या? बिल्कुल नहीं। ध्येय की प्राप्ति के लिए सतत कठिन परिश्रम करना पड़ता है। सतत चलने वाली नन्हीं चींटी सैकड़ों मील तक पहुँच जाती है किंतु डाली पर स्थिर बैठा गरुड़ भी कहीं नहीं पहुँच सकता है। आगे बढ़ने, चलने के लिए हमें कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए। डरकर बैठ जाने से सफलता हमसे रूठ जाती है। संस्कृत में एक सुभाषित है...

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

कवि का कहना है कि समाज में तीन प्रकार के लोग होते हैं- निम्न, मध्यम और उत्तम। निम्न स्वभाव के लोग बिस्तर पर पड़े-पड़े किसी काम के बारे में सोचते हैं। तुरंत उनके मन में विचार आता है कि यदि हम काम शुरू करेंगे तो अमुक-अमुक कठिनाइयाँ आएँगी। इस प्रकृति के लोग कठिनाइयों के डर से कोई काम शुरू ही नहीं करते। समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो जोश में आकर किसी कार्य की शुरुआत तो कर देते हैं परंतु कठिनाइयाँ आने लगती हैं तो वे कार्य छोड़कर भाग खड़े होते हैं। कवि ऐसे लोगों को मध्यम श्रेणी का मानता है। इसी समाज में ऐसे लोग भी हैं जो अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। मुश्किलें आती हैं, विघ्न बाधाएँ आती हैं किंतु उत्तम लोग मार्ग में डटे रहते हैं और लक्ष्य को प्राप्त करके ही विराम लेते हैं। अब आपको तय करना है कि आप अपने को किस श्रेणी में रखना चाहते हैं।

सफल होने के लिए सर्वप्रथम हमें अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। लक्ष्य कई तरह के हो सकते हैं। जैसे कुछ लक्ष्य सामयिक हो सकते हैं। समय, परिस्थिति, आवश्यकता के अनुसार कुछ लक्ष्य थोड़े समय के भी हो सकते हैं। कुछ लक्ष्य ऐसे होते हैं जो जीवन में दीर्घगामी होते हैं। किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम नियोजन करें। अपनी शक्ति, सामर्थ्य पर विचार करें। क्या-क्या कठिनाइयाँ आ सकती हैं उनपर विचार करें। इन कठिनाइयों

को दूर करने के उपायों पर सोचें, इन्हें दूर करने के लिए मदद कहाँ-कहाँ से मिल सकती है इसे भी देखें। इन सारी बातों पर विचार करते हुए समुचित नियोजन करें। नियोजन पूर्ण होते ही कार्य पर जुट जाएँ। ध्यान रहे कि काम की शुचिता बनी रहे। पारदर्शिता हो। गलत साधनों का प्रयोग वर्जित है। सफलता के तीन आवश्यक अंग हैं:- शुद्धता, धैर्य और दृढ़ता। इनका पालन करते हुए आप आगे बढ़ेंगे तो सफलता, सम्मान, खुशी और आनंद आपके कदम चूमेंगे।

लक्ष्य की प्राप्ति में कठिनाइयाँ आ सकती हैं, आएँगी भी किंतु आप जानते ही हैं कि 'लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।' घबराएँ नहीं,डटे रहें। कर्मशील बने रहें। धरती पर तो राम, कृष्ण, ईसा, मोहम्मद सभी को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। सीता, अहिल्या, मरियम सभी को कष्ट सहना पड़ा था तो भला हम किस खेत की मूली हैं। हमें बस अपने पथ पर डटे रहना है। विचलित नहीं होना है। खुद को समझाते-संहालते रहें। चेहरे पर मुस्कान, मस्तिष्क में शीतलता, वाणी में मिठास कायम रहे। सामने लक्ष्य पर निगाहें टिकीं हों, लक्ष्य समीप और समीप आता चला जाएगा।

कठिनाइयों पर विजय पाने और नये को स्वीकार करने का जज्बा भी कायम रहना चाहिए। नये-नये प्रयोग से भी डरने की आवश्यकता नहीं है। असफल प्रयोग की ललकार आपको विजय द्वार तक पहुँचा सकती है। आप यहाँ क्या हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि आप में क्या है यह अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

आज के दौर में हमारा समाज विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता जा रहा है। इस विकास के साथ स्पर्धा, होड़, आधुनिकता, नई-नई चीजों के संग्रह का लोभ भी बढ़ता जा रहा है। मन में लिप्सा, द्वेष, क्रोध, एक को ढकेलकर आगे बढ़ने की होड़ आदि विचारों का प्रदूषण भी बढ़ा है। हमारे इन विचारों का दुष्परिणाम हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है। कहा गया है कि जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसा तन। सोच में अथाह शक्ति होती है। नकारात्मक या सकारात्मक सोच हमारे स्वास्थ्य को सतत प्रभावित करती रहती है। अगर हम रात-दिन दुखी, नाराज चिंतित रहते हैं तो हमारा मन एवं तन

दोनों कमजोर होता जाता है। मन और तन को निरोगी बनाए रखने के लिए मन में सकारात्मक सोच रखना आवश्यक है। इसमें अच्छे मित्र और अच्छी पुस्तकें अधिक सहायक बन सकती हैं अत:

'कर नई शुरुआत, झाले-गेले विसरुन,
चलता-चालता सावरावे घसरुन।'

अर्थात

'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेहु'

अंत में मैं यही कहूँगा कि भले आप किसी गॉड, खुदा या 33 कोटि देवता पर विश्वास करते हैं या नहीं करते किंतु अपने आपपर भरोसा अवश्य करें। यदि आपके भीतर संशय और अविश्वास है तो ये आपको कहीं नहीं पहुँचने देंगे। जहाँ अपने पर विश्वास सबसे बड़ा सुख है तो वहीं संशय सबसे बड़ा दुख। भाई-भाई, शिक्षक-शिष्य, मित्र-सहेली, पति-पत्नी, नागरिक-सत्ता,शासित-शासक के बीच पनपा संशय इन्हें विनाश की अंधी गुफा में ही पहुँचाता है। वहीं यदि इनके बीच विश्वास है तो वह इन्हें विकास के महाद्वार तक पहुँचाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता। विश्वास जोड़ता है, संशय तोड़ता है। विश्वास का दामन पकड़े हुए सदैव संशय से दूरी बनाकर कर्म करते हुए आगे बढ़ते रहिए। मेरा आग्रह है कि-

"मायूस न हो इरादे ना बदल
हालात किसी भी वक्त बदल सकते हैं।"

'शुभास्ते पन्थान: सन्तु'

पूर्व प्रशासकीय अधिकारी (शिक्षण विभाग)
म.न.पा. मुंबई
संपर्क- 7738366165

❑❑❑

मोहन मंगलम

आत्मविश्वास : सफलता का सर्वोत्तम साथी

आत्मविश्वास एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है, आत्मरक्षा होती है और महान कार्यों के सम्पादन में सफलता मिलती है। जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओतप्रोत होता है, उसे कोई चिंता नहीं सताती। आत्मविश्वास ही आशा और उत्साह का जनक होता है। आत्मविश्वास की कमी से सारे संकल्प कमजोर होते हैं, सारे काम बिगड़ते हैं। आत्मविश्वास व्यक्ति की आँख है, उसके बिना व्यक्ति क्या देखेगा? क्या सुनेगा? किया हुआ काम सही होगा ही, सफल होगा ही, हारेंगे नहीं, विजय प्राप्त होगी- यह धारणा आत्मविश्वास से ही उपजती है और विकसित होती है।

हममें से हर कोई कभी न कभी किसी कार्य की सिद्धि के लिए मनौती मांगता है। वृक्ष को, प्रस्तर मूर्ति को, नदी को, तालाब को या आकाश को साक्षी बनाकर मनौती मांगी जाती है। मनौती मांगते समय मन में पक्का विश्वास होता है कि वह पूरी होगी ही।...और उस पक्के आत्मविश्वास का ही परिणाम होता है कि मनौती पूरी हो जाती है।

छोटे-से शिशु को विश्वास होता है कि उसे भूख लगेगी तो माता दूध पिलाएगी ही। यदि विश्वास न हो तो वह रो-रो कर आसमान सिर पर उठा लेगा। इसी तरह विद्यार्थी को विश्वास होता है कि उसे अध्यापक से समुचित विद्या प्राप्त होगी। अध्यापक को भी विश्वास होता है कि उसके द्वारा प्रदत्त विद्या शिष्य में फलवती होगी। सलाह उसे दी जाती है, जिसके विषय में विश्वास हो कि वह उसे मानेगा। जीवन सतत साधना का नाम है। सुविधाओं का प्रलोभन जीवन में विकृतियाँ पैदा करता है। साधना विश्वास के बल पर आगे बढ़ती है। साध ना से सिद्धि मिलेगी ही, यह दृढ़ विश्वास जीवन की दिशा ही बदल देता है।

जीवन में सफलता के लिए आत्मविश्वास उतना ही आवश्यक है, जितना मानव के लिए ऑक्सीजन तथा मछली के लिए पानी। बिना आत्मविश्वास के व्यक्ति सफलता की डगर पर कदम बढ़ा ही नहीं सकता। आत्मविश्वास वह ऊर्जा है, जो सफलता की राह में आने वाली अड़चनों, कठिनाइयों एवं परेशानियों से मुकाबला करने के लिए व्यक्ति को साहस प्रदान करती है। जीवन में अगर हमें कुछ पाना है, किसी भी क्षेत्र में कुछ करके दिखाना है, खुशी से जीना है, तो आत्मविश्वास का होना परम आवश्यक है। आत्मविश्वास में वह शक्ति है जिसके माध्यम से हम कुछ भी कर सकते हैं। आत्मविश्वास से हमारी संकल्प शक्ति बढ़ती है और संकल्प शक्ति से बढ़ती है हमारी आत्मिक शक्ति।

रामचरितमानस का एक प्रसंग है। समुद्र किनारे बैठकर सीता की खोज में दक्षिण दिशा की ओर जाने वाले दल के सदस्य विचार-विमर्श कर रहे थे। गिद्ध सम्पाती ने बता दिया था कि सीता लंका में अशोक वृक्ष के नीचे बैठी-बैठी विलाप करती रहती हैं। वहां समुद्र पार करके कौन पहुंचे, यही विचार का विषय था। सबने अपनी-अपनी क्षमता बताई। अंगद ने कह दिया कि वह लंका पहुंच कर सीता का पता तो लगा लेगा; पर वहां से लौटकर आने की क्षमता उसमें नहीं है। सबने अपनी अक्षमता अनुभव कर ली थी। हनुमान जी मौन बैठे थे। शायद अपने विश्वास और अपनी क्षमता का सन्तुलन बिठा रहे होंगे! तभी जाम्बवन्त ने उन्हें उत्प्रेरित किया। बोले- हनुमान! तुम मौन क्यों हो? यह काम तुम्हारे ही वश का है। तुम समुद्र को पार कर सकते हो, सीता माता का पता लगा सकते हो। इन शब्दों से हनुमान जी के विश्वास को बल मिला। गहरा आत्मविश्वास ही उनका साथी था। इस आत्मविश्वास के बल पर हनुमान जी ने सागर पार कर लिया, लंका में अपनी धाक

जमा दी और सीता माता को धीरज बँधाकर वापस श्रीराम के पास लौट आए।

लोक के विश्वास को अर्जित करने में व्यक्ति पूरा जीवन खपा देता है। उसका सहायक एकमात्र उसका आत्मविश्वास होता है। व्यक्ति विशेष की लोक में जो पैठ बन जाती है, उसका कारण भी विश्वास ही होता है। विश्वास टूटा कि पैठ खत्म हुई, प्रतिष्ठा छूमन्तर हुई। विश्वास से विश्वास जन्म लेता है। हम किसी पर विश्वास न करें तो वह भी हम पर विश्वास नहीं करेगा। विश्वास आदमी को सतत जागरूक रखता है। विश्वास के बल पर सबको आत्मीयता के बन्धन में बांधा जा सकता है। याज्ञवल्क्य की दृष्टि में आत्मभाव का विस्तार परम धर्म के निर्वाह के लिए आधारभूमि तैयार करता है। श्वास-श्वास में रमे हुए इस विश्वास की कल्याणकारी शक्ति का उपयोग कौन नहीं करना चाहेगा?

अपने आत्मविश्वास को सही स्तर पर बनाए रखना भी जरूरी है क्योंकि बिना आत्मविश्वास के कोई बड़ा काम कर पाना संभव नहीं है। बस यह ध्यान रहे कि आत्मविश्वास जरूरत से ज्यादा न हो। यदि यह अति आत्मविश्वास में परिणत हो गया तो आत्मघाती सिद्ध हो सकता है। इससे बचने का उपाय यह है कि अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों से मिलते रहें, महान लोगों की जीवनियाँ पढ़ते रहें ताकि उनकी महानता की तुलना में अपनी लघुता का एहसास बना रहे। साथ ही प्रतिदिन ईमानदारी से अपनी डायरी लिखें जिसमें सहज होकर खुद से बात करें- अपनी कमजोरियों को खुले मन से स्वीकारें तथा अपनी उपलब्धियों पर इतराएं भी।

अमरीकी नवजागरण के प्रवर्तक इमर्सन कहते हैं- "संसार के सारे युद्धों में इतने लोग नहीं हारते, जितने कि सिर्फ घबराहट से।" अत: अपने ऊपर विश्वास रखकर ही दुनिया में बड़े से बड़ा काम सहज ही किए जा सकते हैं और अपना जीवन सफल बनाया जा सकता है। मधुमक्खी हजारों फूलों पर मंडराती हुई शहद इकट्ठा करती है। उसे कहीं से इसका भंडार नहीं मिलता। उसके छत्ते में भरा शहद उसके आत्मविश्वास और कठिन परिश्रम का ही परिणाम है। महात्मा गांधी भी इस आत्मविश्वास के बल पर सत्य और अहिंसा के अस्त्र बनाकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। अंतत: वे भारत माता की दासता रूपी बेड़ी को काटने में सफल रहे। अब्राहम लिंकन ने इसी आत्मविश्वास की बदौलत अथक प्रयास कर दासों को मालिकों के शिकंजे से मुक्त कराया।

आत्मविश्वास की शक्ति अजेय होती है, जो हमें निर्भय बनाती है। इसके द्वारा अकल्पनीय कार्य भी किए जा सकते हैं। यह शक्ति हमारे सामर्थ्य को कई गुना बढ़ा देती है। इसके माध्यम से हम अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। हमारी सफलता हमारे आत्मविश्वास पर टिकी रहती है। यदि आत्मविश्वास की शक्ति क्षीण हो जाती है तो सफलता हमसे कोसों दूर चली जाती है। हमें असफलता का मुंह देखना पड़ता है। इसीलिए हर स्थिति में हमारा आत्मविश्वास ऊंचा रहना चाहिए।

आत्मविश्वास की शक्ति को क्रमिक अभ्यास से पैदा किया जा सकता है। यह हमारे भीतर शनै:-शनै: जागृत होने लगती है। यह शक्ति हमारे भीतर चमत्कारिक परिवर्तन लाने में सक्षम है। जब हम इस शक्ति का अनुभव करने लगते हैं तो एक नवीन ऊर्जा से भर जाते हैं। यही ऊर्जा जीवन को सार्थक बनाने वाले ईंधन की भूमिका निभाती है।

जब तक हमें हमारा लक्ष्य डराता है, तब तक हम सफलता के मार्ग पर एक पग भी आगे नहीं बढ़ पाते। आत्मविश्वास की शक्ति से बीहड़ में मार्ग खोजा जा सकता है, अंतरिक्ष के रहस्य सुलझाए जा सकते हैं और समुद्र की थाह ली जा सकती है। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति साहस और स्थिरता के साथ अपने मानवीय संबंधों को निभाता है। आत्मविश्वास न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों को भी सुदृढ़ और मजबूत बनाता है। आज सबसे अधिक उपेक्षित हो गया है चरित्र। चरित्र की कमजोरी से आदमी की पहचान खो गई है। वह अविश्वसनीय हो गया है। उसकी पहचान कायम करने की, उसकी विश्वसनीयता स्थापित करने की अतीव आवश्यकता है। ईश्वर ने सभी को अनंत शक्तियां प्रदान की हैं। हर किसी में कोई न कोई खास शक्ति होती है। बस, जरूरत है अपने अंदर की उस खास शक्ति को पहचानने की, उसे निखारने की।

Email : manglammk@gmail.com
मोबाइल- 9414273749

❑❑❑

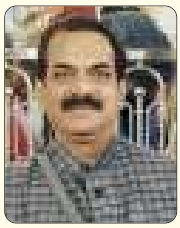

डॉ. किशोर सिन्हा

भेड़िये

हकबकाया-सा 'ज' उठ बैठा था। इधर कुछ दिनों से वह अक्सर रातों को उठ बैठता है। उसे लगता जैसे उसके घर के बाहर भारी हुजूम खड़ा है। हुजूम- जिसमें लोग ही लोग हैं, सिर्फ लोग। लोग जो चीखते जा रहे हैं, चीखते ही जा रहे हैं। यहां तक कि वह हुजूम उसके दरवाजे पर सिमट आया है और दस्तक देने लगा है।

और हकबकाया-सा 'ज' उठ बैठा था। वह साफ-साफ अपने दरवाजे को भड़भड़ाने की आवाज सुन रहा था। वह कल्पना कर रहा था उस हुजूम की जो उसके घर के दरवाजे के बाहर था और इस कल्पना से वह सिहर रहा था कि शायद वह हुजूम उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

हुजूम- जिसमें लोग ही लोग थे। उनके चेहरे से झूलती मांस की गद्दियां फूल ओर पिचक रही थीं। उनकी छाती धौंकनी-सी बज रही थी। उनके होंठों पर खूनी तिलिस्म तैर रहा था और आंखों में दरिन्दे की-सी ललक कौंध रही थी।

बहुत जल्दी ही 'ज' ने अपनी आंखों का रंग बदलता महसूस किया। उसने पाया कि उसकी भुजाओं ने फड़कना शुरु कर दिया है और छाती के अन्दर के समन्दर में जैसे कोई आग धधकने लगी हो।

'ज' ने अपने कमरे के दरवाजे को खोला और बाहर निकल आया। बाहर के हुजूम की आंखों की दरिन्दगी जैसे खून से नहाई हुई हो, उसने 'ज' को अपने कंधे पर उठा लिया।

'ज' ने अपने होठों पर खून का खारा स्वाद महसूस किया। उसने पाया कि अब वह पूरी तरह से हुजूम का होकर रह गया है। वह पूरे जोर-शोर से हुजूम का साथ दे रहा है, आंखों में बसी उसी दरिन्दगी के साथ।

राजमार्ग निस्तब्धता की गंध लिये खोया-सा पड़ा है। दिन-भर की अंतहीन यात्रा के बाद थके, निरलस, चुप्पी-भरे

राजमार्ग को हुजूम अपने पूरे वहशीपन से रौंदने लगा है। राजमार्ग की यह चुप्पी अब 'ज' की आंखों में खटकने लगी है और राजमार्ग की बांहों में पड़े दूधिया सूरज हुजूम की आंखों की तपिश से तड़कने लगे हैं।

राजमार्ग को छोड़ हुजूम अब एक संकरे-से रास्ते में उतर गया है। उसकी आंखों में थोड़ी देर पहले की दहकती आग अब लपटने लगी है, इतना कि हुजूम में अब सिर्फ आंखें ही आंखें नजर आ रही हैं। आंखें ऐसी मानो भेड़िये की आंखों को जगह-जगह टांक दिया गया हो- वैसी ही लोहित, रक्तपिपासु, दरिन्दी ललक से भरी आंखें। अब, बस थोड़ी ही देर में शायद पूरा हुजूम भेड़िये, अनगिनत भेड़ियों में बदल जायेगा।

संकरे रास्ते के दोनों ओर छोटे-छोटे कच्चे-पक्के घर दुबके हुए हैं। कहीं से किसी बच्चे का रुदन उठता भी है तो रास्ते की नमी उसे सोख लेती है। हुजूम अब उन घरों के आसपास फैलने लगा है। उसकी जीभ भेड़िये-सी लपलपाने लगी है। और देखते-देखते पूरा का पूरा हुजूम भेड़िया बन गया। भेड़िया, जो ना खाता है, ना छोड़ता है, वह सिर्फ चिचोरता है।

कोलाहल बढ़ गया है। भेड़िये की जिह्वा कुछ और आगे सरक आयी है।

दरवाजे की सारी कुंडियां टूट चुकी हैं। बच्चों का रुदन हवा को सहमा दे रहा है। औरतें बिलख रही हैं, मर्द गिड़गिड़ा रहे हैं।

भेड़िये की जीभ रक्त, लाल-लाल आदिम रक्त को चाटने में मशगूल हो गयी है। उसके तिलिस्म के खूनी कपाट खुल गये हैं, जिसमें सब समाते जा रहे हैं- सब- बच्चे, औरतें, जवान और बूढ़े। कमजोर छत कांप रही है। मकानों की देह सुलगने लगी है। खरगोश का एक बच्चा गंदे नाले में दुबक गया है। चारों ओर एक कड़वा, तिक्त धुंआ गहराने लगा है और उस धुंआ-आग की संधि में जिन्दगियां चटखने लगी हैं।

धुंआ छंट गया है, किन्तु जिंदगियां अब भी चटख रही हैं। टूटे बर्तन, चूड़ियों और साड़ियों के नुचे-फटे टुकड़े, जले हुए मांस की चिरौंधी गंध, और इन सब के बीच लुटा-पिटा काफिला सिसक रहा है।

कैमरों की भीड़ लग आयी है। चैनलों पर रफ्तार से ब्रेकिंग न्यूज दिखाई जा रही है। उच्चाधिकारियों का एक पूरा अमला उन मकानों के इर्द-गिर्द उठ आया है। भाषण दिये जा रहे हैं।

सवाल...सवाल...सवाल...। सवाल पर सवाल किये जा रहे हैं...कैसे हुआ...कब हुआ...कौन-कौन थे...किधर से आये ...किधर गये...। हवा में ठहरी चिरौंधी गंध अभी बहुत देर तक बासी नहीं पड़ने वाली है। वह गंध अधिकारियों के कार्य में बाधा डाल रही है।

अधिकारी-गण वापस लौट आये हैं...भाषण देने वाले भी...। वे सब हुजूम में शामिल हो गये हैं- उस हुजूम में, जो थोड़ी देर पहले प्रशस्त राजमार्ग से होकर गुजरा था।

हुजूम की आंखों की दरिन्दी ललक अब नि:शेष हो चुकी थी। उसके होंठों का तिलिस्म मुर्दा पड़ गया था।

अब हुजूम चुप है...लोग चुप हैं...भेड़िया चुप है...और उसकी लपलपाती जिह्वा मुंह के भीतर बंद हो चुकी है।

'ज' भी लौट आया है, उसने धीरे से दरवाजा खोला, चिटखिनी लगाई और फिर भेड़िये की-सी तृप्ति लेकर खर्राटे भरने लगा।

मोबाइल-9973129720

❑❑❑

पवित्राय जन्माष्टमी स्पेशल मेडिटेशन रिट्रीट

(अंतरांगन)

26, 27 अगस्त 2024 को गोधाम, खोपोली में आयोजित किया गया। सत्र का संचालन लाइफ कोच पवित्रा ने किया।

श्यामलता गुप्ता

मैं एक माँ हूँ

'भारतीय महिलाएं अपने संस्कारों और संस्कृति की सजीव संरक्षक हैं।' यह वाक्य गरिमा ने भीख मांगते समय रेल के डिब्बे में एक मुसाफिर के मुंह से सुना था। जो अपने पास बैठे सहयात्री को बोल रहा था। उसके पास बैठा व्यक्ति भिक्षा मांगने वाली औरतों की बुराई कर रहा था। वह डिब्बे में भीख मांगने वाली औरतों और लड़कियों को हेय दृष्टि से भी देख रहा था।

गरिमा अपने पति से ठुकराए जाने के बाद असहाय होकर पेट पालने के लिए रेलवे में भिक्षाटन करने लगी थी। गरिमा ने उस आदमी के मुंह से संस्कारों और संस्कृति की संरक्षक नारी से संबंधित शब्दों को सुन कर, भीख मांगने को फैले अपने हाथों को समेट लिया।

अगले स्टेशन पर उतर कर गरिमा प्लेटफॉर्म की बेंच पर बैठ गई। उसके मन में विचार उमड़ने-घुमड़ने लगे। वह सोचने लगी, गरिमा तेरा नाम गरिमा है और तू एक नारी भी है, फिर तू नारी के संस्कारों को ठेस क्यों पहुंचा रही है? लेकिन पेट भरने के लिए रोटी कहां से आएगी, यह सोच कर वह सिहर उठी। उसका आत्मविश्वास फिर से डगमगाने लगा।

तभी उसके मस्तिष्क में एक बिजली-सी कौंध गई। क्यों न पैसेंजरों को गीत या कविताएं सुना कर उनका मनोरंजन करूं, जिससे खुश होकर वे मुझे जो पैसे देंगे, वह भीख नहीं, मनोरंजन का पुरस्कार होगा।

गरिमा एक नए मनोबल के साथ उठ कर खड़ी हो गई। तभी उसके पेट में पीड़ा होने लगी। धम्म से वह फिर बेंच पर बैठ गई। हल्की पीड़ा को सहन करते हुए उसे पति के वे संवाद स्मरण हो आए थे, जब उसके पति ने उसे धक्के मार कर गर्भावस्था में घर से बाहर निकाल दिया था। उसके बाल पकड़ कर घसीटते हुए आंगन में ले जाकर गिरा दिया था और पेट पर लात मारते हुए कहा था, "साली, तेरे पेट में किसका बच्चा है। सही बता नहीं तो मार-मार के तेरी चमड़ी उधेड़ दूंगा।"

गरिमा ने गिड़गिड़ाते हुए कहा था, "मेरे पेट में आपका ही बच्चा है। आपको किसने भ्रमित कर दिया है?"

यह सुनते ही वह गरिमा की पिटाई करते हुए बोला, "मेरा दोस्त कह रहा था कि तेरी औरत के पेट में पलने वाला बच्चा मेरा है। यह बात उसने मुझे शराब पीने के बाद बताई थी और नशे में आदमी सच्चाई उगल देता है। अब बता यह सच है या नहीं?"

गरिमा ने दृढ़ता से कहा, "तुम्हारा दोस्त झूठ बोल रहा है। तुम्हारे घर से जाने के बाद घर आकर वह मेरा सतीत्व भंग करने की चाह रखता था। मेरे विरोध करने के बाद, उसने मुझसे बदला लेने के लिए तुम्हारे कान भर दिए हैं। मैं सच कह रही हूं, मेरा विश्वास करें।"

लेकिन उस शराबी और उजड्ड पति ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। याद करते हुए गरिमा फफक-फफक कर रो पड़ी। साहस बटोर कर वह फिर से खड़ी हो गई। अपनी साड़ी को कसकर बांधा, साथ ही अपने मन को भी साधा। अब उसमें एक साहसी नारी का स्वाभिमान जागृत हो गया था।

गरिमा अब रेल के डिब्बों में फिल्मों के मधुर गीत गाती, कवियों की कविताएं सुनाती। उस पर पैसों की बरसात होने लगी। अपने गायन का प्रसाद मान कर पैसों को अपने आँचल में बटोर लेती। अब उसके मन से भिक्षा की ग्लानि के बादल छंट चुके थे।

एक रात देर होने पर स्टेशन पर उतर कर जब वह भिखारियों के समूह में पहुंची तो एक बीमार भिखारी

पानी-पानी चिल्ला रहा था, "अरे कोई पानी पिला दो, मैं प्यासा मर रहा हूं।" गरिमा रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े कर अपने हाथ से उसे खिलाने लगी और बोली, "अरे खाली पानी पीकर मरेगा क्या! पेट भूखा है, पहले इसमें कुछ अन्न जाने दे।"

गरिमा का नित्य का नियम बन गया था, भिक्षाटन के बाद वृद्ध और बीमार भिखारियों की तीमारदारी में कुछ समय बिताती थी। लेकिन आधी रात के बाद गायब हो जाती थी। वह श्मशान में जाकर सोती थी।

श्मशान की देखभाल करने वाले ने गरिमा से जब इसका राज जानना चाहा तो गरिमा का उत्तर था, "मुझे आदमी से बहुत डर लगता है। यहां मेरी इज्जत तो सुरक्षित रहती है।"

समय पर उसने एक बच्ची को जन्म दिया। तीन साल तक उसने उसका पालन पोषण करते हुए माँ की सम्पूर्ण ममता उस पर उंडेल दी। उसके बाद उसने बच्ची को एक ट्रस्ट को सौंप दिया। ट्रस्ट की सहायता से बच्ची पढ़ाई करने लगी। समय धीरे-धीरे बीत रहा था। गरिमा की लड़की भी बड़ी होती जा रही थी। कभी-कभी गरिमा जाकर उससे मिल आती थी। भिखारियों की निगाहों से वह बेटी को सुरक्षित रखना चाहती थी।

समय का चक्र जब घूमता है तो सब कुछ बदल कर रख देता है। गरिमा ने भी अब अनाथ बच्चों को पालना शुरू कर दिया। बच्चों को वह स्वयं पढ़ाती और उनकी देखभाल करती। कुछ बच्चे तो उसे सड़क पर, पार्कों में ऐसी स्थिति में मिले जो जीवन के लिए संघर्ष कर रहे होते थे। ऐसे बच्चों को उनके माँ-बाप द्वारा पैदा होते ही फेंक दिया जाता था। गरिमा उन बच्चों को संभालती और अपना सम्पूर्ण ममत्व उन पर उड़ेल देती।

अब गरिमा एक नहीं अनेक बच्चों की ममतामयी माँ बन गई थी। कल तक जो स्वयं सहारा तलाशते दर-दर भटकती थी। आज वह असहाय बच्चों के जीवन की डोर बन गई थी। धीरे-धीरे उसका अपना एक 'गरिमा परिवार' ही बन गया। पालने-पोसने के साथ-साथ उसने बच्चों को पढ़ाना भी शुरू कर दिया। परिवार से अब पाठशाला बन गई। अब लोग इसे 'गरिमा आश्रम' के नाम से भी पुकारने लगे।

'गरिमा आश्रम' की प्रसिद्धि पूरे प्रदेश में फैल गई। एक औरत अनाथ बच्चों को स्वावलंबी बना रही थी। आश्रम में पढ़ने वाले बच्चे बड़े हो रहे थे और उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगे थे। उन बच्चों ने ही आर्थिक सहायता देकर 'गरिमा आश्रम' को सेवा का महान मंदिर बना दिया था।'

गरिमा अब दादी, सासू माँ भी बन गई थी। वह अब उम्र की ढलान पर थी लेकिन आश्रम की देखभाल स्वयं ही करती थी।

एक दिन राष्ट्रपति भवन का भव्य हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज रहा था। गरिमा को राष्ट्रपति द्वारा समाज सेवा में अमूल्य योगदान के लिए 'पद्मश्री' से अलंकृत किया जा रहा था। 'पद्मश्री' स्वीकार करते हुए आज गरिमा को अपने नारी होने पर गर्व का अनुभव हो रहा था। एक सामाजिक संगठन ने राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने पर एक समारोह का आयोजन किया। गरिमा की ख्याति सुनकर गरिमा का शराबी पति भी उसे ढूंढ़ते हुए आ गया।

गरिमा को जब पता चला तो उसने पति को 'नमस्ते' कहा।

पति ने नीची नजरें करके 'नमस्ते' कह कर उत्तर दिया। गरिमा पति को संबोधित करते हुए बोली, "जब मुझे घर से निकाला गया था, उस समय मेरी साड़ी जगह-जगह से फटी हुई थी, लेकिन तुम्हारी धोती में आज भी गांठे लगी हुई हैं।"

गरिमा के पति के एक साथी ने कहा, "आपका पति आपके पास रहना चाहता है।"

गरिमा का उत्तर था, "पति बन कर नहीं, एक माँ के पास बच्चे की तरह रह सकता है। अब मैं सिर्फ एक माँ हूं। माँ के लिए एक अपराधी भी क्षम्य होता है।"

कुछ दिनों बाद गरिमा को अमरीका से एक महिला सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण मिला। जब वह हवाई जहाज में उड़ रही थी तो माँ होने के नाते उसके मन में भय की आशंकाओं के बादल उमड़ने-घुमड़ने लगे कि "कहीं ये हवाई जहाज गिर गया तो? मेरे बाद मेरे असंख्य बच्चों, बेटियों,

बहुओं, दामादों का क्या होगा?" आखिर हवाई यात्रा सकुशल सम्पन्न हो गई।

गरिमा जब सम्मेलन के मंच पर चढ़ रही थी तो यह सोच कर उसके पैर कांप रहे थे, कि वह क्या बोलेगी? लेकिन उसके मंच पर पहुंचते ही 'हिंदुस्तान जिंदाबाद' के नारे लगने लगे। गरिमा का आत्मविश्वास लौट आया।

उपस्थित दर्शकों का अभिवादन करने केबाद उसने सबसे पहले राष्ट्र प्रेम की एक कविता सुनाई। उसने फिर बोलना शुरू किया, "प्रकृति का सबसे अनमोल उपहार एक नारी है। नारी त्याग, निष्काम कर्म, साधना, करुणा, ममता, दया, क्षमा की देवी है। ईश्वर ने उसे श्रेष्ठ संस्कारों से सज्जित किया है। संसार के पारिवारिक सामाजिक जीवन की आधारशिला नारी ही है जो एक बहन है, पत्नी है और एक माँ है।"

सारा हॉल तालियों से गूंज उठा। गरिमा ने अपना वक्तव्य जारी रखते हुए कहा, "लेकिन यह भी कहना चाहूंगी- पुरुष देखते हैं नारी के चेहरे का रख-रखाव, नहीं देखते उसके दिल में लगे हैं कितने घाव।"

दर्शक खड़े होकर करतल ध्वनि से गरिमा का अभिनंदन कर रहे थे। जब गरिमा को सम्मानित किया जा रहा था तो पीछे से किसी ने कहा, "अब आप अपने आश्रम के लिए खूब डॉलर बटोर सकती हैं। उपयुक्त अवसर है।"

लेकिन गरिमा तो स्वाभिमान की साक्षात मूर्ति थी। उसने कहा, "मैं उस देश की माँ हूं, जिस देश की धरती पर देवता भी जन्म लेने को तरसते हैं। मेरा देश न तो गरीब है, न भिखारी है। क्यों मैं महान देश भारत की नारी, डॉलर मांग कर देश का मस्तक झुकाऊं...अपने विगत बुरे दिनों में भी अपने शब्दों के बल पर ही मैं अर्थोपार्जन करके अपनी खाली झोली भरती थी। जब भिक्षा नहीं मांगी तो आज डॉलर? मैं हिन्दुस्तान की माँ हूं। माँ कभी मांगती नहीं, वह तो दात्री है। माँ अपने दूध और रक्त से अपने बच्चों को जीवन देती है और फिर मैं तो भारत माता हूं, मैं माँ थी और माँ ही रहूंगी।"

देश लौटने पर उसकी डॉक्टर बेटी माँ का नहीं, भारत माता का स्वागत कर रही थी।

संपर्क- 8655489599

❑❑❑

सन्तवाणी

सन्तजनों की इस दुनिया में चाल निराली होती है।
आंख को भाने वाली मन को मोहने वाली होती है।

प्यार से और नम्रता से रहते हैं भरपूर सदा।
निंदा वैर और नफरत से रखते खुद को दूर सदा।

किसी के अवगुण कभी न देखें गुण को ही अपनाते हैं।
छोटा अपने आप को कहते सबको बड़ा बताते हैं।

मधुर वचन ही लब पर हरदम सन्तजनों के रहता है।
दया धर्म का मन से इनके नित नित दरिया बहता है।

मिलवर्तन का भाव उठाये जग में सदा विचरते हैं।
हर किसी से दुनिया में ये सद्व्यवहार ही करते हैं।

करते हैं उपकार सदा ये परउपकारी होते हैं।
कहे 'हरदेव' सन्त सदा ही जन हितकारी होते हैं।

दिव्य वाणी
निरंकारी बाबा हरदेव महाराज

अगर सत्य का पालन नहीं करते हैं तो सिर्फ अंधेरा है। मनुष्य सिर्फ परछाई का पीछा करता है। सांसारिक दौड़ में ही पूरा जीवन व्यतीत कर देता है। जो भक्त जन हैं वे प्रेम का विश्व निर्मित कर देते हैं। यही उत्तम योगदान है। संतो की दृष्टि सम दृष्टि होती है जो सभी को अपना मानते हैं। संसार विपरीत चाल चलती है, परंतु संतजन हमें सही मार्ग दिखाते हैं। दूरबीन के कांच से जैसे दूर स्थित वस्तु हमें पास दिखायी देती है परंतु उसी दूरबीन को उल्टी ओर से देखने पर उसका उल्टा परिणाम दिखाई देता है। संपूर्ण विश्व में जागरुकता निर्मित होकर विश्व का स्वरूप सुंदर बने। मिलनसारिता और भाईचारा भावना से युक्त होकर सुंदर वातावरण बनाने के लिए सब मिलकर योगदान दें।

सुरेश शर्मा

सच से मुकरने न दिया

जमाने की रवायतों ने, हमें साथ जीने न दिया।
क़लम ने, दर्दभरी ख़्वाहिशों को, मरने न दिया।।

जाम भरे थे लबालब, मयक़दा भी नजदीक रहा,
जहर बताकर ये जाम, उसने मुझे पीने न दिया।।

हर अदा पे क़ुर्बान रहा, ख़ातिर जिसकी उम्र भर,
जिंदगी चार दिन बता, इजहार कभी करने न दिया।।

अपना लहू जलाकर, अंधेरों को रौशन करता रहा,
उसने चिराग बुझाकर, उजाले में मुझे रहने न दिया।।

अनमोल है अश्क और इश्क का रिश्ता, कहकर फिर,
जख़्म दे देकर इश्क के क़ाबिल, मुझे रहने न दिया।।

बड़ा जज़्बाती है रिश्ता, जख़्म और अल्फाज का,
क़लम मेरे हाथ से छीन, दर्द मुझे लिखने न दिया।।

सुना है दो जिस्म एक जान होते हैं, शायरी के दीवाने,
ठुकराकर मेरी शायरी, एक जान मुझे रहने न दिया।।

खुद तोड़कर वादा फिर मुझसे, सुकून में मिलने का।
बेक़रार कर सुकून मेरा, खुद में मुझे रहने न दिया।।

पहली बार स्याही से लिख, खून से लिखा बताया था।
मजमून पर दस्तखत लेकर,सच से मुकरने न दिया।।

जो तुझ पर लिखनी है

आज इक और ताजा दर्दभरी ग़ज़ल लिखनी है।
तू दर्द और देजा मुझे, जिनसे तुझ पर लिखनी है।।

अक्सर ख़फा सी रहती है वो मेरी कलम से।
दर्दीले लफ्ज ढूँढ लेगी, जिनसे तुझ पर लिखनी है।।

कभी बुलावा नहीं आया, किसी भी मुशायरे से।
बज़्म में तेरी मैं गा दूँगा, जो तुझ पर लिखनी है।।

गर किसी ने नहीं सराहा क़लम मेरा, तो क्या?
यकीं है, तू सराह देगी, जो तुझ पर लिखनी है।।

बिना लिखे लफ्ज बिछड़ जाते हैं, मेरी क़लम से।
लफ्ज संजोकर रखने हैं, जिनसे तुझ पर लिखनी है।।

तुम मेरी गजल को सुरताल देना, मैं आवाज दूँगा।
बहुत दीवानगी में लिखूंगा, जो तुझ पर लिखनी है।।

बहुत थकान है, बीमार हूँ, मुद्दतों से लाचार हूँ।
लिख दूँ आख़िरी ग़ज़ल, जो तुझ पर लिखनी है।।

एस जी ओयसिस, सैक्टर 2 बी,
वसुंधरा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मोबाइल- 9910106978

❑❑❑

कविता-

डॉ. रमेश यादव

तुम्हारा दुपट्टा

ऐसे ही सर्द जाड़े की वह शाम
और एक दूसरे का हाथ थामे
हम निकल पड़े थे,
दूर कहीं दूर
दुनियादारी से बेफिक्र,
बेख़बर
अपनी मस्ती में
सतरंगी सपनों में रंगे हुए
एक मुकम्मल जहां की तलाश में
तुमने अपना दुपट्टा
मुझे ओढ़ा दिया था
और मैंने
अपना ओवरकोट तुम्हें...

आज अरसे बाद
एक बार फिर
चहचहाते हुए तुम
आकर बैठ गई हो
मेरे मन के मुंडेर पर
और यादों के परिंदें उड़ने लगे हैं
हवा में उड़ते उन पन्नों की तरह
खुलती जा रही है,
पुरानी यादों की पोटली
परत-दर-परत
और मैं तलाशने लगा हूँ
तुम्हारा अस्तित्व
महसूसने लगता हूँ
उस गंध को
जो कभी मुझे मदहोश कर देती थी
आज तुम नहीं हो मेरे आस-पास
पर तुम्हारा दुपट्टा मुझे
ऊर्जा दे रहा है आज भी
और मैं
उस मोड़ को
निहारे जा रहा हूँ
जहां से हमने एक दूसरे को
अलविदा कहा था
चल पड़े थे
अलग-अलग राहों पर
समाज की रश्मों-रिवाज को निभाने
प्यार को अपने दफनाकर...

लहरें

आती-जाती लहरें,
उठती हैं, गिरती हैं
गिरने-उठने के
इस मंथन में किनारों से
बहुत कुछ समेट लाती हैं
बहुत कुछ छोड़ आती हैं लहरें

उठती हैं तो
ऊर्जा के साथ गरजती हैं
गिरती हैं तो विनम्रता से,
भीतर कहीं खो जाती हैं
बहुत कुछ समाया होता है
इन लहरों की हलचल में
कभी प्रेम-राग तो कभी बवंडर
अपार खनिज संपदा

समेटे होती हैं
समुद्र की ये लहरें

कितना अबुझ होता है ना
लहरों का यह खेल
मानवी मन की तरह।

मैं गीत उसी के गाता हूँ

जब मैं उसे देखता हूँ
मन हर्षित हो जाता है
तन में कंपन-सी होती है
होश अपनी खो बैठता हूँ
मैं गीत उसी के गाता हूँ

सुर में उसके सुर मिलाने
की जब कोशिश करता हूँ
वह कोई और तान छेड़ती है
आंखें मूंद मैं लीन हो जाता हूँ
मैं गीत उसी के गाता हूँ

उसमें ऐसा कुछ जरूर है
भीतर तक जो छू जाती है
होंठ बुदबुदाने लगते हैं
तन मुक्त विचरने लगता है
मै गीत उसी के गाता हूँ

कृष्ण की मुरली-सी वह
अपनी धुन में बजती है
राग-विराग के स्वर्गानंद में
मुझे खींच ले जाती है
मैं गीत उसी के गाता हूँ.

पंक्षी धीरे से उड़ जाता है
निशां अपनी छोड़ जाता है
सांसें संयमित हो जाती हैं
मन कबीर गाने लगता है
मैं गीत उसे के गाता हूँ।

प्रकृति

इश्क कुदरत का
बेमिसाल तोहफा है
इंसानों से इश्क करके
पेट भर गया हो तो
चलो कभी प्रकृति से
दिल लगा के देखते हैं।

फोन- 9820759088, 7977992381

❑❑❑

क्या आप 'आसरा मुक्तांगन' के परिवार में शामिल होना चाहते हैं?

'आसरा मुक्तांगन' की सदस्यता स्वीकार कर आप इस परिवार के सदस्य बन सकते हैं। भारत और नेपाल हेतु सदस्यता दरें-

एक प्रतिः	30/-	वार्षिक सदस्यताः	350/-
त्रैवार्षिक सदस्यताः	1000/-	आजीवन सदस्यताः	6000/-
मानद संरक्षणः 1,00,000/-			

(डाक/कूरियर 'आसरा मुक्तांगन' द्वारा वहन किया जाएगा)
(चेक ड्राफ्ट 'आसरा मुक्तांगन' के नाम से ही देय होंगे)
बैंक का नाम- Bank of India (Mumbai)
A/c No. : 030120110000055
IFSC : BKID0000301

'आसरा मुक्तांगन'
पोस्ट बैग नं.-1, कलवा ठाणे-400605 (महाराष्ट्र)
Email : aasaramuktangan@gmail.com
Mobile : 8108400605/9029784346

डॉ. रोशनी किरण

माँ भारती शत-शत नमन

माँ भारती सादर नमन, माँ भारती शत-शत नमन।
वर्णन कहाँ तक कवि करें, विस्तार इतना है गहन।।
माँ भारती सादर नमन...

बाग, वन-उपवन सलोने, बह रही गंगा निराली,
दिन में सब होली मनाएँ, रात में मनती दिवाली,
प्रभु की इस अनुपम कला से चर-अचर सब हैं मगन।
माँ भारती सादर नमन...

हिम-शैल उत्तर में सुशोभित, उदधि दक्षिण में बहे,
रश्मियाँ कंचन की लेकर अंशुमन पूरब रहे,
कितना सुंदर, कितना प्यारा, देख नियति का सृजन।
माँ भारती सादर नमन...

ग्रीष्म, वर्षा, शीत ऋतुएं करती सब श्रृंगार हैं,
देती हैं यह अवनि को सब हर्ष का उपहार हैं,
देखकर सौंदर्य इसका, क्षितिज चूमे है गगन।
माँ भारती सादर नमन...

साँझ की सुषमा सुशोभित, चाँद-तारों को धरे,
रातरानी सँग में उनके खुशबुओं से मन भरे,
स्वर्ग से भी बढ़ के प्यारा लग रहा अपना चमन।
माँ भारती सादर नमन...

वीर ऐसे हैं दिए जो बाँधे अपने सर कफन,
जिंदगी, आजादी में कर डाली सबने है हवन,
गर्भ में अपने रखे कंचन, रजत कितने रतन?
माँ भारती शत-शत नमन...

जग से न्यारी-हिंदी

जग से न्यारी हिन्दी की दुनिया करती गुणगान है।
चारों ओर पताका फहरे, हिंदी सबकी शान है।।

मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर में गूँजे सब की वाणी से,
व्योम-धरा आल्हादित होते, इसकी विमल कहानी से,
हर भाषाओं से सम्मानित, इसका विविध विधान है।
चारों ओर पताका फहरे, हिंदी सबकी शान है।।1।।

अवधी, मगही, ब्रज, बुन्देली के संग ठाठ निराला है,
खुसरो की ये इश्क मजाजी, बच्चन की मधुशाला है,
कोई नहीं अछूता इससे, घनानंद, रसखान है।
चारों ओर पताका फहरे, हिंदी सब की शान है।।2।।

सूरदास की पदावली यह, तुलसी की चौपाई है,
मीरा के पद इससे शोभित, कबीरा के मन भायी है,
भारतेंदु, नागार्जुन को यह पाकर हुई महान है।
चारों ओर पताका फहरे, हिंदी सब की शान है।।3।।

सूर्यकांत की अनामिका है, पंत की गुंजन पल्लव है,
पुरुषोत्तम, जयशंकर को प्रिय, बालकृष्ण की कलरव है,
श्रुति की पूजा, अर्चन-वंदन, गुरुओं का अभिज्ञान है।
चारों ओर पताका फहरे, हिंदी सब की शान है।।4।।

महादेवी की विरह-व्यथा सब, ओज सुभद्रा की ये है,
सुकवि बिहारी की सतसैया, बूंदें अद्रा की ये है,
रानी लक्ष्मीबाई, पन्ना, पद्मावति की आन है।
चारों ओर पताका फहरे, हिंदी सब की शान है।।5।।

बी-2/5, ग्रीन फील्ड्स, अंधेरी ईस्ट, मुंबई (मो.-9870467130)

❑❑❑

पवन तिवारी

मैं तुम पर कविता क्यों नहीं लिखता?

ओ आदिवासियों, खानाबदोशों,
गरीबों, श्रमिकों, मजदूरों
आदमी की परिभाषा से
निष्कासित लोगों
सुनो- सुनो!
मैं तुम पर कविता क्यों नहीं लिखता?

कविता की मूल पहचान,
उसका स्वर, पता है?
तुम्हें कैसे पता होगा!
हाँ, तुम्हें पता होगी!
भूख की पीड़ा,
अपमान की, नीच की,
अछूत की, हेयता की,
अधिकारों के वंचन की,
उपहास और
दुत्कार की पीड़ा,
ये तो पता होगी!
हाँ, हाँ, ये तो पता होगी!
तभी तो नहीं लिखता,
तुम पर कविता!

कविता की मूल पहचान
संवेदना, पीड़ा, उपेक्षा,
अपमान और संघर्ष है।
ये सब,
तुम्हारी आखों में है।
जब भी तुम्हारी
टिमटिमाती या डबडबाई
पनीली आँखे देखता हूँ,
मुझे तुम्हारी आँखों में,
दुनिया भर की श्रेष्ठ कवितायेँ तैरती हुई,
नजर आती हैं।
तुम्हारे मस्तक की लकीरें
कविता के एक
पूरे इतिहास की गवाही देती हैं।
तुम खुद हजारों-हजार जीती-जागती
कविताओं के शिखर पुरुष हो!
मैं, ऐसे में तुम पर,
क्या कविता लिखूँ?

मुझे क्षमा करना,
मेरी क्षमता नहीं है कि
मैं तुम पर
कविता लिखकर
तुम्हारे विराट व्यक्तित्व
और तुम्हारे अस्तित्व का
तुच्छ आकलन कर सकूँ।
इसीलिये मैं तुम पर कविता नहीं लिखता.

कविता नहीं पढ़ते लोग!

कविता नहीं पढ़ते लोग!
क्योंकि, कविता पढ़ना
मनुष्य बनने की प्रक्रिया है!
कविता में होता है-
जीवन, संवेदना, दया
मनुष्यता का गाढ़ा इतिहास!
एक जीवंत चेतना,

जीवन की एक पूरी प्रकृति!
क्षमा और प्रेम!
कविता नहीं पढ़ते लोग
क्योंकि, कविता पढ़ते-पढ़ते
मनुष्य बनने का
डर होता है।
कविता गढ़ों, आडम्बरों,
पूर्वाग्रहों के पाषाणों को
ध्वस्त कर पनपाती है,
कोमल जीवन की सम्भावना।
बताती है, जीवन के मायने।
कविता में होता है
जीवन का भूगोल और विज्ञान!
कविता नहीं पढ़ते लोग!
क्योंकि, बड़ी मुश्किल से
प्रकृति के विनाश पर
पाषणों के नगर के नगर बने हैं।
बड़ी मुश्किल से मनुष्य
जानवर बना है।
स्वतंत्र से स्वच्छंद बना है।
सम्वेदना से पाषाण बना है!
प्यार से छूटकर
बाजार बना है!
उसको और आगे बढ़ना है!
उसे रोबोट बनना है!
कविता नहीं पढ़ते लोग!
क्योंकि, कविता पढ़ने से
मनुष्य बनने की सम्भावना,
हमेशा बनी रहती है।
कविता रोबोट बनने के
सपने को तोड़ सकती है।
पीछे जाने और फिर से
मनुष्य बनने का
खतरा उठाने से डरते हैं।
कविता नहीं पढ़ते लोग!

10/ए, गुलाब निवास, ममता नर्सिंग होम के सामने
काटेमानिवाली, सारस्वत बैंक के पास,
कल्याण (पूर्व) ठाणे, महाराष्ट्र- 421306
अणु डाक- poetpawan50@gmail.com
संवाद- 7718080978

❑❑❑

संत निरंकारी मिशन द्वारा मनाया गया मुक्ति पर्व दिवस

जीते जी जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त करें

-सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

बर्मिंगम (यू.के.) :'इस संसार में हमारा जन्म हुआ है तो इससे रुकसत होने या देहांत होने को मुक्ती नहीं कहा जा रहा है बल्कि संसार में रहते हुए हर जिम्मेदारी को निभाते हुए जीवनमुक्त अवस्था धारण करना मुक्ति है।'

ये उद्गार निरंकारी सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने संत निरंकारी सत्संग भवन, बर्मिंगम (यू.के.) में 18 अगस्त को आयोजित मुक्ती पर्व दिवस समारोह में उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। सत्गुरु माता जी आजकल दूर देशों में मानव कल्याण यात्रा पर है।

सत्गुरु माता जी ने अपने प्रवचनों में फरमाया कि सामाजिक रूप में हम अगर छात्र के रूप में हैं, कामकाज कर रहे हों या कोई भी जिम्मेदारी निभा रहे हों, हर एक कार्य में जब परमात्मा को शामिल कर लेते हैं तो वह कार्य हमारे दैनंदिन कार्यकलाप न रहकर भक्ती ही बन जाते हैं।

सत्गुरु माता जी ने आगे कहा कि सुकून की यात्रा अंदर से बाहर की तरफ होती है। अगर हमारे भीतर स्थिरता या सुकून नहीं है तो बाहर कितना भी सुंदर वातावरण हो हमें सुकून नहीं मिल सकता। हमें अगर सुकून महसूस करना है तो सुकून का स्रोत परमात्मा को जीवन में लाना होगा। वैसे तो यह परमात्मा हमारे अंगसंग है; पर ब्रह्मज्ञान द्वारा इसे जानकर इसकी भक्ती करें तो सहज ही में मुक्ति के हकदार बन जायेंगे।

इस समारोह में निरंकारी राजपिता रमित जी ने भी अपने पावन विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुक्ति पर्व के दिन जगतमाता बुद्धवंती जी, बाबा अवतार सिंह जी, निरंकारी राजमाता कुलवंत कौर जी, सत्गुरु माता सविंदर हरदेव जी समेत उन सभी संतों के जीवन से प्रेरणा ली जाती है जिन्होंने इस निराकार परमात्मा को जानकर अंतिम समय तक अपनी प्रीत निभाई। हर रिश्ते-नाते से उपर उठकर जीवन में परमात्मा को ही प्राथमिकता दी।

ज्ञात हो कि हर वर्ष संत निरंकारी मिशन द्वारा 15 अगस्त को मुक्ति पर्व दिवस का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी पूरे भारतवर्ष में तथा विदेशों में भी यह पर्व मनाया गया जिसमें श्रद्धालु भक्तों ने बड़ी संख्या में शामिल होकर मिशन के पुरातन दिव्य विभूतियों एवं महान सन्तों के जीवन से प्रेरणा प्राप्त की।

स.वि.लव्हटे, नवी मुंबई

गौतमी चतुर्वेदी पाण्डेय

क्या बचा पाओगे कल?

शुद्ध वायु, शुद्ध जल,
क्या बचा पाओगे कल?
गर रहा जारी ये छल,
सोच लो बस एक पल।

नैनो को हरियाली,
चित्त को चैन।
अनवरत उपलब्ध हैं,
हो दिन या,
हो फिर रैन।
मन को सुकून,
फेफड़ों को हवा।
क्षुधा को भोजन,
रुग्ण को दवा।

जो मुफ्त है
और प्राप्त है,
अक्सर वही अज्ञात है!
अभिशप्त ना कर दो उसे,
जो मिल रही सौगात है!

बिना कुछ दिए,
बिना कुछ मांगे।
मिला है सब कुछ,
बिना कुछ त्यागे।
मानव हो तो यह मान लो,
हो दृढ़प्रतिज्ञ, अब ठान लो।
प्रत्यक्ष को पहचान लो,
विध्वंस का संज्ञान लो!
कर्तव्य अपना जान कर,
दायित्व अपना पूर्ण कर
सम्मानितों! सम्मान लो।
सम्मानितों, सम्मान लो।

दरख़्तों की छाँव में

पास बैठा करो उनके भी तुम कभी
आते जाते मिलेंगी दुआएँ कई।
देख कर ही तुम्हें जीते हैं वे, सुनो!
उनकी मौजूदगी में, शिफाएँ कई!

अपना 'आज' न्यौछावर किया शौक से,
अपना कल है दिया, झुर्रियाँ कह रहीं!
हाथ से अपने सहला के माथा तेरा
देंगे जड़, भाग्य में, वे सितारे कई!

छाँव पोषण मिला इन दरख़्तों से ही
कर ना दें हम जड़ें, इनकी ही खोखली
अपनी बुनियाद से छू रहे आसमा
सींच लो प्रेम से, इन जड़ों को अभी!

कितने किस्से छुपे इन किताबों में है
जिनसे मिल जाएगी जिंद की रोशनी
उनको सुनकर,पढ़ो, वे भी खिल जाएँगे
फैलेगा यश तुम्हारा, गुणा हो कई!

ए-18, गोल्डन सिटी, धनोरी, पुणे-15 (मो. 9545559025)

❑❑❑

देवकी कुलकर्णी

वेदना

निशब्द हुई वेदना, जख्म बोलने लगे।
अकस्मात हंसते हंसते, आँखे पिघालाने लगे।
हार गयी इस खेल में, ये सत्य समझने लगी,
नि:शब्द आक्रोश सारा, क्यूँ साँसे थमने लगीं।
हटा के सब बोझिल बातें, मैं बंधनमुक्त हो गई
कौन-सी राह पर चलूँ, कौन-सा सपना चुनूं।
क्यूँ सपने देखने लगी, क्यूँ सिमटने लगी मैं सपने।
नजरिया बदलने लगी, हारा हुआ खेल मैं।
रोमांच से खेलने लगी।

आग

जंगल में भड़की है आग,
बुझाने कौन आएगा साथ।
मन में उठी द्वेष की ज्वाला,
सिर्फ प्रेम से (क्या) बुझेगी भला।
मिलता सुख छोटी-मोटी बातों में,
तब सारी ऋतु, बस जाती आंखों में।
भीगा भी जलता, सूखे के साथ
पर क्यों बैर करते सबके साथ।
सुख-दुख का फेरा आता जाता,
कि जैसे धूप छांव का खेल है चलता।
रिमझिम बरसता है बादल,
इंद्र धनुष भी सजाता है बादल।
प्राजक्त के फूल यूं बिखरते,
कि जैसे सप्तसूर हों निखरते।
जात-पात सब बैर कराते,
पर शीलभंग में कुछ ना बचाते।
आंख में आंसू भर भर आते,
क्या बंधन से मुक्त हो पाते...

मोबाइल-9422001114

❑❑❑

देवेंद्र कुमार तिवारी

राष्ट्रीय परिवेश

यह देश का परिवेश कैसा हो गया,
नफरतों की आँधियां अब चल रहीं।
उठो, रोको मोड़ दो इनकी दिशा,
अब ये हमारी संस्कृति में पल रहीं।

यहाँ बढ़ रही संबंधों में प्रतिकूलता,
और ताना-बाना टूटता परिवार का।
अब है नहीं खुशबू कहीं विश्वास की,
खो गया जीवन, निश्छल प्यार का।

ये मूल्य खण्डित हो रहे परिवारों के,
यूँ छटपटाहट बढ़ रही है स्वार्थ की।
यह इसलिए दु:खों का पारावार है,
हमको ना चिंता हो रही परमार्थ की।

ये हिंसा और नफरत भरे परिवेश में,
हम सुखी जीवन कल्पना कैसे करें?
अब पल रहे अज्ञान के साये में सब,
हम कैसे संयम, सत्य को मन में धरें?

यूँ हिंसा से जीना हमें आता नहीं,
सद्भावना से, प्रेम का जीवन जिया।
मिलन की राहों से क्यूँ चलते नहीं ?
वो अमन का संदेश भी हमने दिया।

आजादी के, क्षण अधिक बीते नहीं,
प्रगति औ संक्रान्ति का ये काल है।
कर रहे अवरूद्ध इस अभियान को,
बाह्य शक्ति की क्या कोई चाल है?

अश्रु-धारा अब कहीं बहने ना पाए,
नित् प्रीत का दस्तूर चलता ही रहे।
माँ भारती की गोद में खेलें सदा,
संबंध सदियों का यूँ ही बढ़ता रहे।।

मोबाइल-9868473214

❑❑❑

कविता-

सुरज बिरादर

शुद्ध कविता की खोज

एक दिन मैं निकला घर से
शुद्ध कविता की खोज में

देखता हूँ भीड़, मोटर गाड़ी, सड़क
उसे चीरकर मैं पहुंच गया स्विमिंग पूल वाले घर में
जहां दिखती है संगमरमर की फर्श
बड़ा सा आईना जिसमें प्रति पल दिखते हैं काले चेहरे
उस आईने में देखा मैंने बड़ा सा कमरा
कमरे में प्रवेश करके मैंने देखा,
अधेड़ उम्र का लंबोदर आदमी सो रहा है
कमरे में है वह सारी सुख सुविधाएं
जिनके लिए आदमी उम्र गुजार देता है
लेकिन वहां मौजूद नहीं थी कविता की आत्मा
न कोई शब्द, न कोई कल्पना...

मैं बैठ गया निराश होकर उस फर्श पर
जिसमें आईने जैसी चमक थी
मैंने गौर से देखा फर्श में अपना चेहरा
चेहरा कुछ काला पड़ गया था
एकाएक उस प्रतिबिंब ने कुछ बुदबुदाते हुए कहा
कविता की खोज में तुम यहां आए हो
जहां केवल सत्ता है वासना की, पैसों की, जाति की
कविता तुम्हें वहां मिलेगी जहां जाओगे तुम चलकर
जब थकेंगे तुम्हारे पैर, जब तुम गिर पड़ोगे
तब पल्लवित होगा तुम्हारे मन में कविता का ऑसू
जब छूटेगी तुम्हारी बस और तुम बैठ जाओगे
कड़ी धूप में निराश होकर तपती जमीन पर
तब आंखों से बहकर निकलेगी कविता
जब तुम करोगे बड़े-बड़े संस्थानों के मठाधीशों की पूजा
और तुम्हें धक्के मार कर निकाला जाएगा उन्हीं के द्वारा
तब आएगी निकल कर एक कविता तुम्हारे द्वार पर
जब रेल्वे स्टेशन की भीड़ में तुम्हें धक्के लगेंगे
और तुम गिर पड़ोगे रेल के बाहर प्लेटफार्म पर
और जाते हुए देखोगे रेल को गंतव्य स्थान की ओर
तब प्लेटफार्म पर चलकर आएगी एक कविता तुम्हारे पास

कविता आती है असफलताओं के साथ और चली जाती है
जब तुम्हें सत्ता का अहंकार होने लगता है,
जब तुम्हारी मानवता मर जाती है
सत्ता के भोग के साथ, तुम नहीं भोग सकते कविता का सुख
कविता आती है दुखों के साथ
कटे हुए हाथ के खून से निकलती है कविता
बादल राग जब होता है तब बरसती है कविता
जब तुम अपने में खोकर ढूंढ़ते हो तब मिलती है कविता
जब सड़क पर चलते हुए तुम देखते हो
भीख मांगते हुए बच्चे के ऑखों में आंसू
तब मिलती है तुम्हें शुद्ध कविता

और वह प्रतिबिंब मौन हो गया
मैंने अपना काला शर्ट निकाल कर उस फर्श को ढक दिया
और घर की ओर बढ़ चला...

जिनका कोई घर नहीं होता

मैंने देखा है वो घर
जब मैं लौट रहा था अपने घर
सड़क किनारे बैठे भिक्षुक का भी होता है एक घर
गोधूलि में जब सब अपने-अपने घर को लौट रहे होते हैं
तब भिक्षुक लौटता है अपन घर
वहीं सड़क किनारे किसी कोने में वह अपना घर सजाता है।

उसका घर हमारे घर से अलग है

वो चारदीवारी में कैद नहीं है
बल्कि वो चौराहे पर है

वहीं उसने अपना सपनों का महल खड़ा किया है
उसकी छत सितारों से सजी है
उसके घर की कोई सीमा नहीं है
वो दस बाय दस की खोली में नहीं रहता।

मैंने उसकी तरफ ईर्ष्या से देखा
क्या वो हम से ज़्यादा सुखी है?
वो सो रहा था, जैसे उसने पूरी दुनिया जीत ली हो
और अब उसे थकान के मारे नींद आ रही हो
क्या वो सपना देख रहा था?
क्या भिक्षुक भी सपना देखते हैं?

क्या उसका सपना भी हमारी तरह लोभ,
काम और सत्ता से घिरा हुआ होगा?
नहीं, उसका सपना है; कल कैसे पेट भरेगा?
इससे ज़्यादा वो सोच नहीं सकता
क्योंकि वो मनुष्य है, बुद्धिजीवी नहीं
वो आज भी प्रकृति के करीब है
उसे बस दो जून रोटी चाहिए।

मैंने अपना बिंब सड़क के डबरे पर देखा
मुझे चार हाथों व दो सिरों वाला असुर दिखा
जो चारों ओर से सब कुछ बटोरना चाहता है
एक मुँह से राम और
दूसरे मुँह से काम पूर्ति करना चाहता है
उस बिंब को देख मैं डर गया और सीधा घर गया।

सहायक अध्यापक, मॉडर्न महाविद्यालय, पुणे, मोबाइल- 8975250146

❑❑❑

डॉ. सुनील देवधर

साक्षरता गीत

लिखना है पढ़ना है जीवन बदलना है
जो कुछ पढ़ा है, उसे फिर समझना है।

अंधेरों के बादल हर पल छटेंगे
उठकर उजालों में हम सब चलेंगे
खोया बहुत कुछ अब तो संभलना है।
पढ़ना है लिखना है जीवन बदलना है।

अक्षर हो आगे अक्षर हो पीछे
शब्दों का सागर बगिया को सींचे
पहेली हो कोई अब तो सुलझना है।
पढ़ना है लिखना है जीवन बदलना है।

छोटा बड़ा या बूढ़ा हो कोई
सब में छुपी एक शक्ति है सोई,
मुश्किल हो कोई, हमें ना उलझना है।
पढ़ना है लिखना है जीवन बदलना है
जो कुछ पढ़ा है उसे फिर समझना है।

मोबाइल- 9823546592.
Email : Sunilkdeodhar@gmail.com

❑❑❑

यात्रा वृतांत-

ऋता सिंह

गुरुद्वारों की मेरी अद्भुत यात्रा

पंजाबी संस्कृति से मेरा परिचय विवाहोपरांत ही हुआ। इस क्षेत्र की भाषा, खान-पान, तीज-त्योहार आदि से मेरा नजदीक से साक्षात्कार हुआ। इससे पूर्व बाँग्ला संस्कृति, साहित्य और भाषा के बीज हमारे माता-पिता द्वारा हृदय की बड़ी गहराई में बो दिए गए थे।

ससुराल में सभी से भरपूर स्नेह मिला साथ ही ससुर जी जिन्हें हम सब बावजी (बाबूजी शब्द का अपभ्रंश) कहते थे, पंजाब की जानकारी और नानक साहब के जीवन की लघु कथाओं से मुझे परिचित करवाते रहे।

धीरे-धीरे गुरुद्वारे के वातावरण को देख मेरे मन में विश्वास और आस्था घर करती गई। साथ ही विभिन्न गुरुद्वारों के दर्शन की इच्छा मन में पनपती रही। यह स्वर्णिम अवसर भी अपने जीवन में मुझे समय-समय पर मिलता रहा।

अपने इस संस्मरण में विभिन्न गुरुद्वारों की यात्रा का विवरण उपस्थित कर रही हूँ।

हम कुछ सहेलियाँ रन ऑफ कच्छ फेस्टिवल देखने के लिए रवाना हुए। कच्छ के कई दर्शनीय स्थल जैसे विजय विलास महल, मांडवी, कालोडुंगर, सफेद रेगिस्तान, प्राग महल और कुछ छोटे गाँव देखने के बाद तथा फेस्टिवल के चार दिन तक भरपूर आनंद लेने के बाद हम भुज पहुँचे। दूसरे दिन सुबह हम सब लखपत के लिए रवाना हुए।

लखपत भुज से 134 कि. मी के अंतर पर है। यह कच्छ का अंतिम छोर है।

आज लखपत में एकांत है। दूर तक एक लंबी चौड़ी दीवार फैली है जो किसी समय किला का हिस्सा थी। भीषण भूंकप के कारण सब कुछ नष्ट हो गया।किले की दीवार भी दरारों से पटी पड़ी है। वहाँ से जब हवा गुजरती है तो डरावनी आवाज आती है इसलिए इस गाँव को उजड़ा भूतिया गाँव कहा जाता है।

जिस लखपत में एक समय 10,000 लोग रहते थे, बारंबार भूकंप के बाद धीरे-धीरे आबादी घटती गई और आज यहाँ गिनकर शायद सौ लोग रहते हैं।

आज यहाँ संपूर्ण वीरानगी है। गुरुनानक के समय इसे बस्ता बंदर कहा जाता था क्योंकि यह व्यापार का एक बड़ा बंदरगाह था। खूब व्यस्त जगह हुआ करती थी। समुद्री मार्ग से कई देशों से माल आता था और फिर ऊँटों की सहायता से गुजरात, सौराष्ट्र तथा कच्छ तक व्यापारी माल ले जाते थे। व्यापारी वर्ग बड़ी संख्या में यहाँ रहा करते थे। बंदरगाह में हलचल रहती थी। काफी लोग यहाँ व्यापार करके धनी लखपति बन गए थे इसीलिए बस्ता बंदर आगे चलकर लखपत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यहाँ आकर भारत की सीमा समाप्त होती है। इसके बाद आपको विशाल अरब सागर दिखाई देगा। किले की दीवार पर चढ़कर अगर आप समुद्र की ओर देखें तो यहाँ चलती साँए-साँए करती हुई हवा और किले की दीवारों से टकराती-लौटती लहरें संपूर्ण एकांतवास की कथा सुनाती हैं। आज यहाँ

शायद ही कोई पर्यटक आता है। आज यहाँ कुछ नहीं है पर फिर भी सिक्ख समुदाय के लिए यह एक पुण्य भूमि है।

सन् 1506-1513 और 1519-1521 यह उस समय की बात है जब नानक साहब विश्व भ्रमण करने और अपने सिद्धांतों से संसार को परिचित करवाने निकले थे।

उनकी इस यात्रा को उदासी कहा जाता है। जिसका अर्थ है संपूर्ण रूप से संन्यास ग्रहण करना। यद्यपि नानक साहब का परिवार था, संतानें थीं पर वे भीतर ही भीतर समाज में एक अलग प्रकार से जागरूकता लाना चाहते थे। उस समय हमारा समाज न केवल मुगलों को झेल रहा था, बल्कि लोगों का धर्म परिवर्तन भी बड़ी संख्या में किया जा रहा था। शूद्र जाति के साथ छुआछूत के तहत समाज में उथल-पुथल भी मची हुई थी।

नानक साहब अपने जीवन के बीस वर्ष पैदल ही चलकर यात्रा करते रहे। उनके साथ उनके कुछ शिष्य भी थे।

लखपत वही स्थान है जहाँ से गुरु नानक अपनी दूसरी और चौथी उदासी यात्रा के दौरान यहाँ पर कुछ दिन रहे थे फिर यहीं से वे मक्का के लिए रवाना हुए थे। उन दिनों मक्का में आज की तरह इतनी सुरक्षा की तीव्रता नहीं थी।

आज यहाँ एक सुंदर साफ-सुथरा सफेद रंग से पुता हुआ गुरुद्वारा है।साथ में छोटा सा बगीचा भी है। गुरुद्वारे में दो छोटे कमरे हैं। एक कमरे में, कमरे के बीचोबीच ग्रंथसाहब चौकी पर है। इस कमरे के द्वार की ऊँचाई बहुत कम है। झुककर ही कमरे में प्रवेश कर सकते हैं। संभवत: यात्रियों को स्मरण दिलाने के लिए कि ईश्वर के दरबार में सिर झुकाकर ही प्रवेश करना है।

हम सभी सखियों ने सिर ढाँककर कमरे में प्रवेश कर ग्रंथ साहिब को नमन किया। इसी कमरे से बाहर निकलने पर बाईं ओर और एक छोटा कमरा है जहाँ नानक साहब की पादुका और पालकी रखी गई है। सोलह सौ शताब्दी की पूजनीय वस्तुओं के दर्शन से हम सभी भावविभोर हो उठीं। कमरे के बाहर एक छोटा सा लकड़ी के नक्काशीदार खंभों का बरामदा है, हम सब थोड़ी देर वहीं पर बैठे। मन को बहुत सुकून का अहसास हुआ।

मुझे एक अलग प्रकार का रोमांच प्रतीत हुआ। मैं अपने इस पंजाबी सिक्ख मिड्डा परिवार की प्रथम सदस्य थी जिसे नानक साहब की पादुका का और उनकी यात्रा का साधन पालकी के दर्शन करने का सुअवसर मिला।

हम महिलाओं को देखकर वहाँ के पाठी सामने आए, सतश्रीआकाल कहकर हमारा अभिवादन किया और कहा कि हम लंगर में शामिल हों।

स्वच्छ परिसर, सब तरफ लाल टाट के बने गलीचे लगे हुए थे। एक सिक्ख पाठी, एक सहायक और एक मुसलमान स्त्री ये ही गुरुद्वारे की सेवा में रहते हैं। हमने धुली हुई थाली, चम्मच उठा ली और हमें बहुत स्नेह और आतिथ्य के साथ दाल रोटी और सब्जी का प्रसाद मिला। हमने भोजन के बाद बर्तन नल के बहते पानी में साबुन लगाकर माँजकर रखे। हर गुरुद्वारे का यही नियम है।

आज यह स्थान स्थानीय सिक्ख समुदाय तथा गुरुद्वारा श्री गुरु नानक सिंह सभा गाँधीधाम की देखरेख में है। भीषण भूंकप के बाद भी इस गुरुद्वारे को सुरक्षित रखे जाने की वजह से सन 2004 में UNESCO Asia-Pacific Award भी इस स्थान को मिला है।

नानक साहब सिमरन, अरदास और समुदाय में बैठकर भोजन अर्थात लंगर इनका महत्त्व समझा गए हैं। जाति, धर्म, वर्ण आदि में किसी प्रकार का कोई भेद न रखते हुए सबको अपना समझ सबके साथ भोजन करने की शिक्षा दे गए थे।

नानक जी ने करतारपुर गाँव में प्रथम गुरुद्वारे की स्थापना की थी। अपने जीवन के अठारह वर्ष वे यहीं रहे। सत्तर वर्ष की आयु में उन्होंने इसी गाँव में अपनी देह त्याग दी।

एक ओंकार, शबद अर्थात ग्रंथसाहब में लिखी गुरुवाणी ही उनकी सबसे बड़ी देन है। किसी पंडित या पूजा की आवश्यकता नहीं। हर व्यक्ति अपनी तरह से ईश्वर का स्मरण कर सकता है, ईश्वर एक है। उसकी स्तुति में गीत गा सकता है। समाज में कारसेवा और सबके साथ बाँटकर साँझे चूल्हे पर भोजन पकाकर मिलकर खाना ताकि कोई भूखा न सोए यही आज तक चलती आई नानक साहब की सीख है।

करतारपुर जाना तो एक सपना ही रहेगा पर लखपत की यात्रा अविस्मरणीय है।

मोबाइल-9822188517

❑❑❑

पुस्तक समीक्षा-

हृदयेश मयंक

सोच और तन्हाई की गुनगुनाहट हैं मुस्तहसन अज़्म की ग़ज़लें

हिन्दुस्तान और नेपाल की सरहद के करीब एक छोटा शहर है किशनगंज और वहां से तीन चार किलोमीटर की दूरी पर एक खूबसूरत गाँव है गाछपाड़ा। उसी गाँव में एक किसान परिवार में जन्मे, पले बढ़े मुस्तहसन की रगों में आज भी एक किसान की आत्मा बसती है। वे संस्कार, भाई चारा और रिश्तों की गर्माहट की अहमियत को बखूबी जानते हैं और आजकल के दौर के छल-छद्म और मक्कारियों से कोसों दूर हैं। शायद यही कारण है कि मुस्तहसन की ग़ज़लों में माटी की खुशबू, रिश्तों की गर्माहट और आत्मीयता बची हुई है, बचा हुआ है उनका खरापन और अपनी माटी और संस्कृति से लगाव। उनकी शायरी में लफ़्ज़ों की जादूगरी या ग़ज़लों की बुनावट में रवायती रस्साकशी व हिदायतें कम हैं बल्कि उनकी बुनावट में मीटर, बहर, वजन के साथ बुनी जाती है आज के देश व दुनिया के तमाम तरह के सवाल, मिले जुले भारतीय समाज का लोकजीवन, इस मुल्क का अनूठापन, देश का स्वाभिमान और उसके लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना। ज्यादातर उर्दू शायरी में भाषागत दुरुहता और फारसी और उर्दू के शब्दों का बहुतायत में प्रयोग दिखाई देता है वहीं मुस्तहसन की ग़ज़लों में एक देशज लहजा और गंगा-जमुनी तहजीब ज्यादा दिखाई पड़ती है।

उनके पहले संग्रह 'मंजिल के आस-पास' पर भी मुझे लिखने का मौका मिला था। कुछ दिनों पूर्व ही इनके नये संग्रह 'हमवार नहीं कुछ भी' की ग़ज़लों को पढ़ने का मौका मिला। बीमारी के बाद इनकी ग़ज़लों को पढ़ते हुए मुझे मुस्तहसन के अंदर के एक प्रौढ़ शायर और उनकी ग़ज़लों में आई तब्दीली का एक नया रूप देखने को मिला। वह खुद भी तब्दीली के कायल हैं, उनका एक शेर देखें- 'हर लम्हा गुजरता हूं संवरने के अमल से, इस ख़ाक में है चाक की तासीर अभी तक।'

पूरा एक दिन उनकी ग़ज़लों को पढ़ते और गुनगुनाते यूँ बीता लगा कि मैं अपनी माटी, अपनी आबो-हवा के बीचो-बीच से गुजरते हुए खेतों खलिहानों बागों और बगीचों के बीचो-बीच आत्मीय लोगों के साथ बोल बतिया रहा हूँ। देश दुनिया में तमाम तंग वातावरण के बावजूद मुस्तहसन का शायर अपनी उसी जमीन पर अड़ा हुआ है। हालाकि हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। आज के हालात पर उनका एक शेर हम अक्सर पढ़ते और अनुभव करते रहे हैं- 'हमारे बाद यह रस्मे-वफा रहे न रहे, गले मिलो कि ये आबो-हवा रहे न रहे।'

आज जिस दौर में हम रह रहे हैं आपसी सहयोग व भाई चारे के हिमायती ढेर सारे हिन्दी उर्दू के रचनाकार पाल्हे बदलते हुए सत्ता व व्यवस्था की चापलूसी में दिन रात एक करते नजर आते हैं। सांप्रदायिक व चरमपंथियों के खिलाफ़ जो लोग व्यवस्थाओं से टकराने की बात कर रहे थे वही लोग उनकी झोली में दुबक कर कुछ प्राप्त कर लेने की होड़ में सहज दिखलाई पड़ जाएंगे। धर्म निरपेक्षता व आपसी इकजहती की परंपरा को लोग खूंटी पर टांग निश्चिंत हो गये हैं। यह एक शर्मनाक स्थिति है ऐसे में कवि और शायरों की एक अलग भूमिका होनी चाहिए। सबके दिलो-दिमाग में एक चरम पंथी व्यवस्था का चाबुक झनझनाहट पैदा कर रहा है। मुस्तहसन का शायर इन हालात के ख़िलाफ बोल उठता है- 'दिल के ख़िलाफ चल न अना के ख़िलाफ चल, कुछ कर गुजरना हो तो हवा के ख़िलाफ चल।'

मुस्तहसन के नये संग्रह की ग़ज़लों को पढ़ते हुए निदा फाजली का यह क़ौल बेसाख़्ता याद आता रहा-

मुस्तहसन की ग़ज़लें उस धरती की फस्ल हैं जहां

पेड़ों का एहतराम किया जाता है, बादलों से कलाम किया जाता है और परिंदों की चहकारों को सलाम किया जाता है। कुदरत और इंसान की यह दोस्ती इनकी शायरी में उन मूल्यों की हिफाजत करती नजर आती है जो जिन्दगी में जिन्दगी जीने का हौसला जगाती है, इंसान और इंसान के बीच की दूरियां मिटाती है और वक़्त को तहजीब के आदाब सिखाती है।

मुस्तहसन के दो शेर देखें- 'मुझे भटका रहा है मेरा इक डर मुसलसल, मेरी इक सोच उसी सिम्त जाना चाहती है। वो चिड़िया चोंच से पेड़ को देती है पानी, वो पागल है जो इक कल सुहाना चाहती है।'

आज की सत्ता और व्यवस्था से टकराहट की राह छोड़ लोग कोस कर अपना फर्ज निभा लेते हैं- मुस्तहसन का एक शेर देखें- 'सूरज को कोसने से अंधेरा न जाएगा, जुगनू हो अपने हिस्से की तुम रौशनी करो।'

शायर बेचैन है इन हालात से, अपने और अपने मुल्क को निकालने के लिए छटपटाता है- 'देखकर हादसा मुंह फेर के जाने वालों, देख तो लो कोई अपना भी तो हो सकता है। मेरी आंखों नें जो देखा वह अधूरा सपना, तू अगर देख ले पूरा भी तो हो सकता है।'

मुस्तहसन का शायर जागरुक है उसे पसंद नहीं कि कवि और शायर सत्ता के सामने दुम हिलाते दिखें। उनका यह शेर उनकी सोच को दर्शाता है- 'उसके लहजे में पनपती है खुशामद की अदा, शायरी जब किसी दरबार में आ जाती है।'

शायर हिम्मत बंधाते हुए कह उठता है- 'दुनिया से डरोगे तो डराएगी यह हरदम, लड़ जाओ गर इससे तो ये दमदार नहीं है। बनता है वही वक़्त के हाथों में खिलौना, हालात से लड़ने को जो तैयार नहीं है।'

एक दूसरी ग़ज़ल के दो शेर देखें- 'हवा के डर से जो सहमा उड़ान से पहले, वही जमीं पे गिरा इम्तिहान से पहले। मदद किसी की करो या करो नमाज अदा, मजा तो जब है कि पहुंचो अजान से पहले।

मुस्तहसन अज़्म एक प्रौढ़ सोच और ऊंचे इरादों वाले शायर हैं तभी तो कहते हैं- 'मिलेगा तपते सहरा में भी पानी, तड़प तो हो बला कि प्यास तो हो।'

उनका इरादा तो देखिये- 'अपनी मेहनत से बदलनी है लकीरें हाथ की, अपने चेहरे को अता करना है इक चेहरा मुझे।'

और यह चेहरा इकजहती का हो सकता है, अम्न और भाईचारे का हो सकता है, देश और दुनिया को और भी बेहतर बनाने के लिए क़ुर्बानी देने वाले का हो सकता है। मुस्तहसन के पास खूबसूरत शायरी है, देश दुनिया को बदलने का जज़्बा है। दकियानूसी सोच के ख़िलाफ खड़ा होने की क़ूवत है। इंसानियत की जितनी भी किस्में हो सकती हैं सब इन में हैं। प्रेम, प्यार, इश्क की शायरी इनके यहाँ खाना पूर्ति के लिए नहीं है बल्कि उनके खूबसूरत जीवन जीने की ललक की तरह है।

उनके कुछ खूबसूरत अश्आर यहाँ प्रस्तुत हैं- 'टूटा है अगर दिल तो चले आओ मेरे पास, ऐसे ही मरीजों का मैं लुकमान रहा हूं।'

- 'मैं जिसको गुनगुनाता हूं तन्हा रहगुजर पर, वो तन्हाई मुझे गुनगुनाना चाहती है।'

- 'मुझको गिरने दो, बिखरने दो, फना होने दो, कतरा ए अश्क हूं आंखों में न पालो मुझको।'

- 'पीठ को नाव बना ली मैंने, जब भी बच्चों ने शिकारा चाहा।'

- 'अपने छप्पर से उड़ाये थे परिंदे, जब से, आस बांधे हुए हैं पेड़ लगाये हुए हैं।'

- 'उम्र भर तेरे लिए चलता रहूं, फासला इतना बड़ा मत दे मुझे।'

- 'मैं तेरे शहर में रहता हूँ परेशां अक्सर, ते रुखसार पे बिखरी हुई जुल्फों की तरह।'

- 'जो चढ़ गई नफासत जुबां पे, जाती नहीं, जरा सा बैठा था उर्दू की इक किताब के साथ।'

- 'वर्षों से कैनवस पे मैं भरता रहा हूँ रंग, और वर्षों से खड़ी है वो तस्वीर की तरह।'

- 'ग़ज़ल के शेर में आ जाए दिलकशी अबके, सो तेरे हुस्न का कुछ रंग भर के देखते हैं।'

- 'चंद लफ़्जों ने खुदकशी कर ली, इक खबर को खबर बनाते हुए।'

' दुनिया को जगाकर ही आती है खुशी घर में, दु:ख चोर सा आता है पैगाम नहीं देता।'

- 'बनता है वही अपने मुकद्दर का सिकंदर, करता है जो खुद राह को हमवार हमेशा।'

मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि मुस्तहसन अज़्म इस दौर के शायरों में अपना एक अलग मुकाम रखते हैं। मैं उनके लिए उन्हीं के शब्दों में दुआ करता हूँ- 'आंखों को रंगे-ख़्वाब इरादों को पर मिले, जो साथ तेरे हौसले का उम्र भर मिले।'

राष्ट्रनायक सरदार पटेल

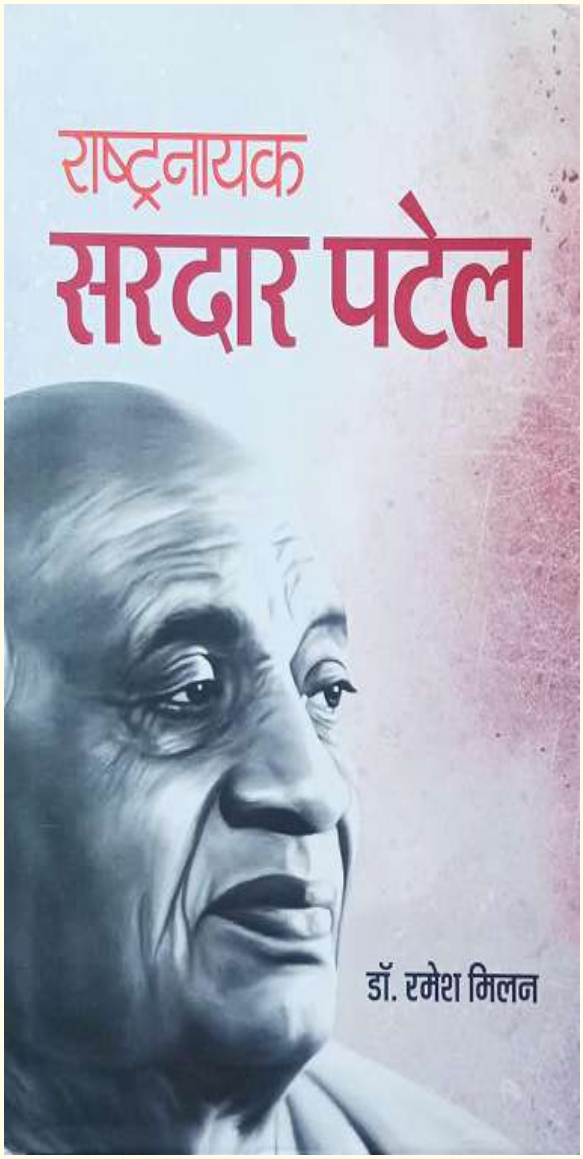

सरदार वल्लभभाई पटेल एक ऐसी शख्सियत का नाम है जिसने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति और रणनीतिक कौशल के बल पर 565 के लगभग देसी रियासतों को मिलाकर इस भारत गणराज्य के स्वरुप को साकार किया था। आज भी उनका नाम लेते ही भारत के हर नागरिक का मन श्रद्धा से भर जाता है। स्वतंत्रता संग्राम में कई आंदोलनों का नेतृत्व करने वाले वल्लभभाई संभवतया गांधी जी के सबसे समर्पित अनुयायी थे। बापू के एक इशारे पर अपने सामने आए देश के पहले प्रधानमंत्री के पद पर से अपनी दावेदारी त्याग देने वाले महापुरुष ने उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री रहते हुए भी सादगी से जीवन जीने की मिशाल पेश की थी।

सरदार पटेल के जीवन के सभी पक्षों को सच्चाई और गहराई के साथ एक ही जगह प्रस्तुत करने का भगीरथ प्रयास डॉ. रमेश गुप्त मिलन ने इस पुस्तक में किया है। यह पुस्तक सरदार पटेल पर उनके द्वारा एक लम्बे समय तक शोध करने के बाद लिखी गई है। इस पुस्तक को पढ़ना ऐसे ही है जैसे सरदार पटेल को प्रत्यक्ष जानना।

सरदार का व्यक्तित्व हर भारतीय को आज भी आकर्षित करता है। उस सीधे सादे से दिखते व्यक्ति के अंदर कैसे एक लौह पुरुष रहता था वह जानने की इच्छा हम सब में होनी चाहिए। इस जिज्ञासा का उत्तर पाने के लिए इस तरह की पुस्तकों को पढ़ना और फिर विचार करना बहुत जरूरी है।

डॉ. रमेश गुप्त मिलन सशक्त लेखनी के धनी है। जन जन के प्रिय देश के स्वतंत्रता संग्राम के अड़िग सेनानी, स्वतंत्र भारत के शिल्पी सरदार वल्लभभाई पटेल पर ऐसी जानकारीपूर्ण और रोचक पुस्तक के लिए मैं उन्हें हृदय से बधाई देता हूँ तथा इस पुस्तक की सफलता की कामना करता हूँ।

– संजीव निगम

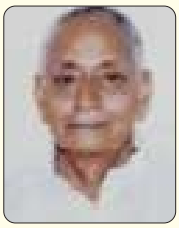

पीतम सिंह 'प्रियतम'

भाषा संस्कृति और संस्कार

जिस प्रकार शब्द में अर्थ, शरीर में आत्मा और किसी भी पदार्थ में उसकी गुणवत्ता निहित रहती है, उसी प्रकार किसी भी राष्ट्र में उसकी संस्कृति और संस्कार छिपे रहते हैं। मानव का संस्कारित होना मानव योनि में ही संभव है अन्य किसी भी योनि में नहीं।

किसी भी राष्ट्र का निर्माण पत्थरों-पत्थर से बने महलों, मोटर गाड़ियों, हीरे-जवाहरात, धन सम्पत्ति से नहीं अपितु वहाँ के नागरिकों के व्यवहार, आचरण, संस्कृति और संस्कार से नापा जा सकता है और नापा जाना भी चाहिए।

संस्कृति और सभ्यता में अंतर है। सभ्यता भौतिक विकास की प्रतीक है। रेल, हवाई जहाज, टेलिविजन, मोबाइल, भौतिक विकास (शारीरिक सुख सुविधा के साध न हैं) यह हमारी या किसी भी देश की सभ्यता का प्रमाण है और बाह्य शक्ति है। संस्कृति आंतरिक शक्ति के अंतर्गत होती है। यह आंतरिक शक्ति भौतिक नहीं आध्यात्मिक शक्ति होती है। यह आध्यात्मिक शक्ति ही किसी देश की संस्कृति है।

सभ्यता और संस्कृति में एक और महत्त्वपूर्ण अंतर है- सभ्यता समयानुसार बदलती रहती है किंतु संस्कृति स्थायी हाती है, जो प्राय: नहीं बदलती स्थायी होती है। सभ्यता शरीर है तो संस्कृति आत्मा। सभ्यता विकासोन्मुख रहती है जबकि संस्कृति में विकास नहीं होता। संस्कृति के मूल तत्त्व सदाकत, शाश्वत होते हैं क्योंकि संस्कृति शाश्वत ज्ञान से ही चलती है। इसीलिए उसमें बदलाव की संभावना नहीं रहती।

एक देश भौतिक दृष्टि से (सभ्यता में) बहुत ऊँचा स्थान रख सकता है। हो सकता है विज्ञान द्वारा किए गये आविष्कार से चरम विकास पर हो और संस्कृति स्तर पर बहुत नीचा हो। मोटरें सुख साधन अधिक हों, किंतु मोटरों में बैठकर डकैती डालते हों, अबोध बालक-बालिकाओं से बलात्कार करते हों, श्रवण वह दृश्य साधन हों, किंतु अश्लीलता का प्रदर्शन करते हों। देश की युवा-युवतियाँ आचरणहीन हों तो उस देश की सभ्यता तो ऊँची हो सकती है किंतु संस्कृति में वह नीचा ही होगा।

संस्कृति किसी सशक्त केंद्रीय विचार से उत्पन्न होती है। केंद्रीय विचार जितना सबल होगा, संस्कृति उतनी ही सबल होगी। संसार में अनेक संस्कृति आई और नष्ट होती चली गयी क्योंकि विचारों के संघर्ष में उन संस्कृतियों की केंद्रीय विचारधारा निर्बल पड़ गयी। मिश्र, ग्रीक, रोम, बैबीलोन की संस्कृतियाँ नष्ट होती चली गयीं। ये देश तो अब भी मौजूद हैं। अब जो कुछ है वह ईंट, पत्थर है अर्थात शरीर है आत्मा (संस्कृति) निकल गयी। भारत पर शक, हूण, यहूदियों के आक्रमण हुए, अंग्रेजों-मुसलमानों का सदियो तक राज्य रहा। संस्कृति को बिगाड़ने समाप्त करने के जीतोड़ प्रयास किए गये द्य सब लोग थक कर बैठ गये। भारतीय संस्कृति आज भी जिंदा है। हिमालय की तरह अटल है, सागर के समान अगाध है, आकाश के समान व्यापक है, पृथ्वी के समान सहनशील है, वायु के समान सुखद है और अग्नि के समान ऊर्जावान है। मानवता की रक्षक है। किसी विशेष जाति, वर्ग, क्षेत्र, सम्प्रदाय, व्यक्ति स्थान तक सीमित नहीं है। समस्त प्रकृति, वनस्पति जीव-जंतुओं, पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों की बात करती है। लोगों ने अर्थ और तंत्र के स्वार्थी युग में विज्ञान द्वारा किए गये विकास को जीवन लक्ष्य मान लिया। भले ही युग बदला हो, भूगोल बदला हो, साधना का रहस्य बदला हो, आवश्यकताएँ बदल गयी हों, पर बदला नहीं पानी और नहीं बदली प्रकृति और न ही बदली इस प्रकृति पर आधारित हमारी संस्कृति। वास्तव में भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व-सत्य,

अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय विश्व की रचना के आधार में नींव बनकर बैठे हुए हैं। इसलिए कहा गया था सत्येनोत्तमिता - भूमिः। सत्य पर भूमि टिकी हुई है। एक ऐसी सच्चाई जिसे हजारों वर्षों की भौतिकवादी टक्कर भी नहीं हिला सकी। इन पाँचों-यम, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, जो संस्कृति के का प्रभाव इन तत्त्वों पर नहीं पड़ता। जिस प्रकार उद्योगपति उद्योग सफलतापूर्वक चलाने के लिए, भूमि, श्रम, प्रबंधन की व्यवस्था अपने संकल्प, साहस के साथ करता है उसी प्रकार परमात्मा भी इस सृष्टि के सफलतापूर्वक चलाने के लिए प्रकृति-भू-जल, अग्नि, पवन अंतरिक्ष, गृह नक्षत्र आदि के साथ भाषा और ज्ञान भी देता है। मनुष्य का भूमंडल पर विकास वेद विद्या-वेद भाषा (देव वाणी, संस्कृत) से ही संभव हुआ है। ऋग्वेद विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक है। विश्व के वैदिक-वैज्ञानिक, इसको मान्यता देते हैं। ऋग्वेद की भाषा संस्कृत ही है। संस्कृत के अतिरिक्त किसी भाषा में किसी शब्द का मूल अर्थ जानने की शक्ति नहीं है। भाषा के बिना 'ज्ञान' का संवर्धन प्रसार नहीं हो सकता। भाषा के बिना मानव जीवन अधूरा सा हो जाता है। भाषा का महत्त्व मनुष्य के बचपन से लेकर आजीवन तक रहता है- धर्म, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता, अर्थशास्त्र, राजनीति, विधि, सभी प्रकार की विज्ञान, ज्ञान की शिक्षा का माध्यम भाषा ही है। संस्कृति का संरक्षण व संवर्धन भाषा से ही है।

सौभाग्य ही यह हमारा है कि हमारी भाषा संस्कृत सब भाषाओं की जननी है। अति प्राचीन काल से ही संस्कृत भाषा का प्रचलन है। संस्कृत भाषा की समृद्धता, प्राचीनता, ध्वन्यात्मक सादृश्य के साथ-साथ धात्वर्थ भी है। संस्कृत भाषा से ही हिंदी भाषा का विकास हुआ जो अब विश्व की सबसे लोकप्रिय अधिक बोली जाने वाली भाषा है। वैदिक संसकृति के मूल में संस्कृत का ही योगदान है। संस्कृति से ही संस्कार पनपते हैं।

संस्कार वृत्तियों, प्रवृत्तियों वासनाओं, भावनाओं का वह सूक्ष्म रूप से बीज रूप में आत्मा के साथ जन्म-जन्मांतरों तक सफर करता है। संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान करने का नाम ही संस्कार है। जैसे सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि में डालकर उसका संस्कार करता है उसी प्रकार बालक के उत्पन्न होते ही उसे संस्कार की अग्नि में तपाकर दुर्गणों को नष्ट कर उसमें सद्गुण डालने के प्रयत्न को वैदिक विचारधारा में 'संस्कार' कहा गया है।

बालक का जब जन्म होता है वह दो प्रकार के संस्कार लेकर आता है: एक तो वो संस्कार होते हैं जो जन्मांतरों से अपने साथ लाता है। दूसरे प्रकार के संस्कार वो होते हैं जिन्हें वह अपने माता-पिता और वंश परंपरा से संस्कारों के रूप में प्राप्त करता है। ये अच्छे भी हो सकते हैं बुरे भी हो सकते हैं। संस्कारों द्वारा मानव के नव निर्माण की योजना जिसमें बालक को ऐसे पर्यावरण-वातावरण में रखा जाए जहाँ अच्छे संस्कारों को पनपने का अवसर प्राप्त हो। हमारी भौतिक योजनाएँ तो अधिक होती हैं- बाँध बनाना, नहर खोदना, सड़कें बनाना, रेलमार्ग बना देना। सुख साधन जुटाना। शरीर को सुख देने के साधन जुटा लेना, जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं। इन सुखों को भोगने वाला मनुष्य तो जीवन की समस्या हल हो गयी, रोजी रोटी का प्रबंध हो गया। ऐसी सोच वाले लोग समझते हैं यही है जीवन का लक्ष्य। वास्तव में वे भूल जाते हैं, ये साधन सच्चा सुख नहीं दे सकते। असली सुख की योजना है संस्कारों द्वारा मानव का नवनिर्माण करना। भौतिक योजनाएँ भी जरूरी है किंतु इन योजनाओं का लाभ लेने वाला मानव कहाँ खो गया? मानव अगर सच्चा ना हो, ईमानदार ना हो, दूसरों के दुख में दुखी होने वाला, सुख में सुखी होने वाला ना हो, एक-दूसरे को सहयोग करने की भावना ना हो, भ्रष्टाचारी हो, तो ये विज्ञान द्वारा विकास के साधन किस काम आएँगे।

संसार का शासन कार्य और कारण के नियम से चलता है। कोई कार्य बिना कारण के नहीं होगा और हर कार्य का कारण होता है। जिसे हम कारण कहते हैं। वह पिछले जन्म का कार्य होता है। संस्कार ही कर्मों का लेखा है। संस्कार ही कर्मों का भोग है। एक-एक कर्म के भोग भोगने पड़ते हैं क्योंकि कोई कर्म संस्कार छोड़े बगैर नहीं रहता। अच्छे कर्मों का या तो तुरंत अच्छा फल मिल जाता है या अच्छे कर्मों से मस्तिष्क पर अच्छा संस्कार लिखा जाता है। मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है। बुरे कर्मों का भी या तो तुरंत फल मिल जाता है उससे मस्तिष्क पर बुरा संस्कार लिखा जाता है। कर्मों

द्वारा ही संस्कार बदले जा सकते हैं। संस्कारित होने से कर्म भी अच्छे होने लगते हैं। वैदिक मान्यता के अनुसार गर्भाधान से लेकर अंतिम संस्कार तक 16 बार संस्कारित होने का अवसर मानव जीवन में होता है। संस्कारित जीवन ही वास्तविक जीवन है। अन्य योनियों में तो इसका प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि अन्य योनियाँ केवल भोग योनियाँ हैं। मानव योनि कर्म योनि है। सारांशत: संस्कृत (भाषा) संस्कृति और संस्कार एक त्रिभुज के तीन कोण हैं जिनको एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि किसी एक के अलग होने से यह आकृति आधारहीन हो जाएगी जिसको सृष्टि के आदि वास्तुकारों (ऋषियों, मुनियों, बुद्धिजीवियों) ने सुखद, निरोग और निर्भय समाज के लिए बनाया था।

- वैदिक संस्कार जागरण परिषद
सी-6, पूर्वी ज्योति नगर,
दिल्ली- 110093
मोबाइल- 9891482021

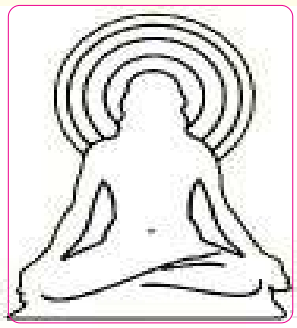

प्रभु स्मरण

नेति नेति कह नमन करूँ निर्माता, नित्य नियन्ता को।
निराकार, नर्लेप, निरंजन, अजर अमर अभियन्ता को।।

सत्य समर्थ सर्वज्ञ सनातन, शुद्ध, सुवासित सरल शांत।
अभेद्य अलौकिक आदि, अनादि, शक्ति से सब उद्भ्रांत।।

जिसके बिंबित प्रतिबिंबों से प्रतिभासित होते दिनमान।
महा तत्व के अंश मात्र से, प्रकृति, दिख रही गतिमान।।

प्रकति में यह गति निरंतर, इस जगती का मूलाधार।
इसी तरह मानव योनि में आधार बने मानव संस्कार।।

सस्कार जहाँ आधार रहे परिवार प्रथम शिक्षालय है।
मानव नव निर्माण नींव का आदर्श विद्यालय है।।

माता पिता अभिभावक प्रथम शिक्षक विद्यालय के।
आचार्य विद्वान महात्मा महादेव हैं इस देवालय के।।

परिवार जहाँ गृहस्थ जीवन के आधार बताए जाते हैं।
यज्ञ योग वैदिक शिक्षा, संस्कार सिखाए जाते हैं।।

संरकारित परिवारों में जब खिलते ऐसे फूल हैं।
गुण कर्म और स्वभाव जिनके परस्पर अनुकूल हैं।।

अनुभव सभी कर लेते जब, हो गए हैं विकसित सुमन।
योजना निश्चित हो जाती, कहते जिसे परिणय मिलन।।

और यह परिणय मिलन नव सृजन का आधार है।
इस सृजन के मूल में भी निहित मानवीय संस्कार है।।

संस्कार नहीं व्यापार कोई, न ही कोई व्यवसाय है ये।
मानवीय निर्माण का सीधा सरल अध्याय है ये।।

अध्याय का उद्देश्य यह धर्म आचारित संतान हो।
भोगवादी संस्कृति का, जिंदगी से अवसान हो।।

संस्कार की मिट्टी में तपकर, जो संतान निकलती है।
सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य के पथ से नहीं फिसलती है।।

संस्कार हीन किसी जन को, सम्मान नहीं मिला करता।
अनुभव यह भी बतलाता, काँटों में सुमन खिला करता।।

जिसको काँटों से भय न हो, वह फूलों पर क्यों ललचाए?
सूरज बन जिसे चमकना है, वह अंधड़ से क्यों घबराए?

तेरी कृपा के बिन प्रभु, पत्ता तक हिल सकता नहीं।
स्वयं आचरण किये बिना, सुपरिणाम मिल सकता नहीं।।

इसीलिए हे ईश हम, करते सदा तेरा ही स्मरण।
तेरी कृपा से हो, हमारा प्रबुद्ध शुद्धाचरण।।

सत्य सनातन नियम तेरे, कर रहे जगती का नियमन।
प्रणम्य हो 'प्रियतम' सभी के, समुचित व्यवस्था को नमन।।

गतिविधियां-

'आसरा मुक्तांगन' का सामाजिक सरोकार

'आसरा मुक्तांगन' द्वारा शबाना पटेल जी के प्रयासों से शाहपुर, महाराष्ट्र में महिला सशक्तिकरण विषय पर आयोजित कार्यक्रम में उत्कृष्ट मार्गदर्शन किया, जिसमें स्थानीय महिलाओं का भरपूर सहयोग रहा।

इस कार्यक्रम में शबना पटेल तथा अरुण सिंह ने मार्गदर्शन किया। रूपाली ढोनर ने अपना अनुभव उपस्थित नारी शक्ति से साझा किया।

मुंबई कस्टम्स प्रिव्हेंटिव्ह ग्रुप 'सी' ऑफीसर्स गणेशोत्सव समिति

द्वारा नवीन सीमा शुल्क भवन,
मुंबई में आयोजित गणेशोत्सव
के अवसर पर उपस्थित-

श्री समीर वानखेडे (आय.आर.एस.)
चांदनी किरन (सुपरिंटेंडेंट कस्टम्स)

इनके साथ वार्तालाप करते हुए-
बालकृष्ण लोहोटे, आसरा मुक्तांगन संपादक मंडल के सदस्य एवं अन्य मान्यवर।

-संतोष पेडणेकर

'आसरा मुक्तांगन' अगस्त 2024 में आए

बाल विशेषांक

तेरहवें वर्ष के प्रथम अंक का प्रकाशन दुबई में भी हुआ–

अंक का लोकार्पण करते हुए– इस्माइल अब्देकरीम, प्रोफेसर लंदन स्कूल, **डॉ. श्री योगेश मालखरे,** सामाजिक कार्यकर्ता एवं अध्यक्ष– स्माइल प्लस सोशल फाउंडेशन, पुणे। **योगेश कदम,** निदेशक रियल वेंचर प्राइम, यूएई और **जीवन प्रशिक्षक एवं कार्यकारी संपादक– पवित्रा सांवत** की उपस्थिति रही।

पहली यूट्यूब पत्रिका 'व्यंग्य यात्रा यूट्यूब मासिकी'

एक समय था जब केवल दूरदर्शन था। तब कार्यक्रमों में साहित्य की बड़ी हिस्सेदारी रहती थी। 'पत्रिका' जैसे कार्यक्रम साहित्यकारों को रचनात्मक सुख देते थे। आज उनका अभाव खलता है। सितम्बर 2023 में प्रेम जनमेजय ने, व्यंग्य यात्रा यूट्यूब मासिकी के पहले अंक द्वारा इस अभाव को पाटने की कोशिश की। तकनीकी प्रमुख राम विलास शास्त्री को उज्ज्वल और विदित के तकनीकी परामर्श के संग अनेक सहयोगियों का साथ मिला।

सितम्बर 2024 अंक, हिंदी दिवस 'पर्व' आयोजन की विसंगतियों पर केंद्रित है।

अंक का लिंक है– https://youtu.be/ZtdVxI5hO3o

ठाणे जिले में अयोजित कार्यक्रम

आसरा मुक्तांगन एवं आसरा फाउंडेशन द्वारा शबाना पटेल के सानिध्य में आयोजित रोजगार प्रशिक्षण शिविर।

!! हरि ओम !!

वसुंधरा फाउंडेशन, ठाणे

(पंजीकरण संख्या-ई / 2824 / ठाणे / दिनांक 11/10/2002)

ब्रह्मविद्या श्वसन और विचार का अभ्यास है

शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने की कुंजी

- **ब्रह्मविद्या क्या है?**

'ब्रह्मविद्या' योग और दर्शन का एक प्राचीन विज्ञान है। सर्वोच्च परमात्मा को 'ब्रह्म' कहा जाता है। अर्थात् जिसे हम ईश्वर, परमेश्वर, भगवान कहते हैं, उसका ज्ञान 'ब्रह्मविद्या' के नाम से जाना जाता है। 'ब्रह्मविद्या' हमें सिखाती है कि हर इंसान भगवान का अंश है, यानी उसके भीतर दिव्यता छिपी हुई है और यही कारण है कि हर इंसान में सभी कठिनाइयों और समस्याओं पर काबू पाने की शक्ति होती है। 'ब्रह्मविद्या' इस दिव्यता, इस शक्ति को कैसे जागृत किया जाए इसकी निश्चित विधियाँ सिखाती है।

- **ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम में क्या पढ़ाया जाता है?**

ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम सही श्वसन और सही सोच पर जोर देता है। वैकल्पिक रूप से, यह सांस और विचार का अभ्यास है, जिस पर संपूर्ण मानव जीवन आधारित है। सांस और विचार के बिना, जीवन का विचार ही असंभव है। क्योंकि इन दोनों चीजों का इस्तेमाल हम जन्म से ही अनजाने में करते आ रहे हैं। लेकिन किसी ने हमें यह नहीं सिखाया कि इसका उपयोग कैसे किया जाए। कोई भी स्कूल सही साँस लेना और सही सोच नहीं सिखाता। हैरानी की बात यह है कि औसत व्यक्ति अपने फेफड़ों की क्षमता का केवल 10% ही उपयोग करता है। परिणामस्वरूप, परिवेशी वायु से थोड़ी मात्रा में श्वसन वायु अंदर ली जाती है। फेफड़ों की क्षमता का कम उपयोग फेफड़ों की परत को मोटा करने का कारण बनता है। शरीर में प्राणवायु की आपूर्ति कम होने के कारण चलते समय सांस फूलना, सीढ़ियां चढ़ते समय सांस फूलना महसूस होता है। अस्थमा, श्वसन रोग, रक्त शुद्धि न होना आदि अनेक रोगों के लोग शिकार होते हैं।

- **ब्रह्मविद्या सीखने के क्या फायदे हैं?**

उन अभ्यासकर्ताओं के अनुभव के आधार पर जिन्होंने इस अनुशासन को सीखा है और पिछले कुछ वर्षों में नियमित अभ्यास बनाए रखा है, और अपने स्वयं के शिक्षण अनुभव से, मैं निम्नलिखित लाभों के बारे में कह सकता हूँ।

1. ब्रह्मविद्या अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य की नींव रखती है।
2. इसमें सिखाए गए उचित सांस, प्राणायाम और ध्यान अभ्यास के माध्यम से कई लोगों ने अस्थमा, जोड़ों के दर्द, उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), मधुमेह, हृदय रोग, मानसिक कमजोरी और अवसाद जैसी कई बीमारियों पर काबू पाया है।

उपरोक्त फायदों को ध्यान में रखते हुए ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने का निर्णय लें। आपका जीवन निश्चित रूप से एक नया आनंदमय मोड़ लेगा। आपका जीवन खुशियों से भर जाएगा। जो कोई भी सांस लेता है, पुरुष या महिला, कक्षा में शामिल हो सकता है।

प.पू. साठे गुरुजी उर्फ बालयोगी मुकुंद- संस्थापक वसुंधरा प्रतिष्ठान

डॉ. सुलभा कोरे को 33वां आचार्य आनंद ऋषि साहित्य पुरस्कार

आचार्य आनंद ऋषि साहित्य निधि, हैदराबाद द्वारा इस वर्ष महाराष्ट्र स्थित संपादक, हिंदी- मराठी पत्रकारिता में विगत 25 वर्षों से विविध प्रकार का लेखन, संपादन, अनेक पुस्तकों का हिंदी, मराठी, अंग्रेजी में अनुवाद, मौलिक साहित्य सृजन, अनूदित साहित्य, आत्मकथा आदि विधाओं की हिंदीत्तर साहित्यकार, अनेक पुरस्कार ग्रहीता तथा आसरा मुक्तांगन के संपादकीय मंडल की सदस्या डॉ. सुलभा कोरे को दिनांक 15 अगस्त, 2024 को हैदराबाद में 33वें आचार्य आनंद ऋषि साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिनांक 15 अगस्त को संत- साध्वियों के सानिध्य में रामकोट स्थित कच्छी भवन के सभागार में आयोजित इस समारोह में पुरस्कार ग्रहीता को सर्वश्री अशोक कोठारी- प्रसिद्ध उद्योगपति, अनेक साहित्यकों तथा आचार्य आनंद ऋषि साहित्य निधि की टीम सर्वश्री सुरेशचंद बोहरा- अध्यक्ष, सुरेश गुगलिया- कार्यदर्शी, मदनलाल संचेती- कोषाध्यक्ष एवं डॉ. मदन देवी पोकरणा आदि मान्यवरों तथा लगभग 950-1000 दर्शकों की उपस्थिति में यह पुरस्कार प्रदान किया गया।
डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. दुर्गेश नंदिनी, डॉ. अहिल्या मिश्रा, डॉ. मुखविंदर सिन्हा, डॉ. राज नारायण अवस्थी ने चयन क्रिया दायित्व का निर्वाह किया। ज्ञात रहे, उक्त पुरस्कार प्रतिवर्ष आचार्य आनंद ऋषि की जयंती के उपलक्ष्य में प्रदान किया जाता है।

-सुरेश गुगलीय

RNI NO. MAHHIN/2012/45032

बने विश्व भाषा यह हिन्दी

राष्ट्रभाषा हिन्दी हो देश की,
दिल से यह स्वीकार कीजिए।

जीवन में पग-पग हिन्दी को,
एक सुदृढ़ आधार दीजिए।

हर क्षण हर पल हिन्दी में ही,
नित्य प्रति व्यवहार कीजिए।

हिन्दी का परचम लहराए,
ऐसा जन आधार दीजिए।

जान से प्यारी अपनी भाषा,
इसको प्यार दुलार दीजिए।

हिन्दी है भारत जन भाषा,
ऐसा खूब प्रचार कीजिए।

हिन्दवासियो हिन्दी अपना कर,
हिन्दी का सत्कार कीजिए।

वंदनीय मातृभाषा अपनी,
माता का मनुहार कीजिए।

बने विश्व भाषा यह हिन्दी,
जग को यह उपहार दीजिए।

राष्ट्रभाषा हिन्दी हो देश की,
दिल से यह स्वीकार कीजिए।

– डॉ. रमेश मिलन

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक महानंदा एम. शिरकर द्वारा साई ऑफसेट, डी-39, अमरज्ञान इंडस्ट्रियल इस्टेट, एस.टी. डेपो के सामने खोपट, ठाणे (महाराष्ट्र) से मुद्रित एवं मंगल प्रभात, सूर्य नगर, विटावा, ठाणे-400605 से प्रकाशित
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com मोबाइल- 09029784346, 08108400605